thearyasamaj.org

ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-आश्विन-कार्तिक, संवत् 2071
अक्टूबर 2014

अंक 111, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

युग-युग तक अमर रहेगी, ऋषि दयानन्द की गाथा ।
मानव उसको स्मरण करेगा, कहकर अपना त्राता ।।

विजयादशमी एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें

thearyasamaj.org

विजयदशमी

'विजयदशमी' में विजय के साथ 'दशमी' शब्द आया।
इन्हीं शब्दों में विजय का रहस्य, है सारा समाया॥

'दशम्' का स्थान आता है 'नवम्' के बाद में
अंक तो केवल ही नौ हैं, अंक के इतिहास में॥

अस्तु नव को साधते जो है, 'दशम्' को साध पाते।
नौ दिनों तक सतत अन्तः शक्तियाँ अपनी जगाते॥

'अष्ट चक्र नवहारा' युक्त इस नर तन नगर में।
'चक्र'-ऊर्जा केन्द्र-शक्ति रुप देवों को मनाते॥

वे हि अन्तः शक्ति से दस इन्द्रियों पर नियंत्रण कर।
धर्म के दस लक्षणों का जिन्दगीं में अवतरण कर॥

धर्म धारण साधना, तप की प्रवरता-ओज पाते।
दाशरथि श्रीराम मर्यादा पुरुष पूरण कहाव।

वे अधर्म दशमुखी आतंक के पर्याय के घर।
वनचरों, गिरिजन, जमीं से जुड़े उनकी सैन्य लेकर॥

जब चुनौती रुप बनकर हैं कदम अपना बढ़ाते।
तो उसे दल, बल सहित रज में मिला के, चैन पाते॥

दशमुखी या शतमुखी, कितने हि हो उसके मुखोटे।
उसकी दुर्गति ही निर्यात है, जो भी करता कर्म खोटे॥

उसकी सेना और सोना, भाई बंदों का सहारा।
काम ना आया, मरा बे मौत रावण-अहंकारा॥

'यतोधर्मस्ततोजय' का सत्य जग-जन को बताओ।
'विजयदशमी'-धर्म-सत् की विजय का उत्सव मनाओ॥

रचयिता – दयाशंकर गोयल
पता : 11554, डी–सुदामा नगर,
इन्दौर–452009 (म.प्र.)

thearyasamaj.org

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष - १०, अंक ४ — ओ३म् — मास/सन् - अक्टूबर - २०१४

विक्रमी संवत् - २०७१
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११५
दयानन्दाब्द - १९१

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : हे प्रभु ! हम तुम्हें समर्पित है	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : हे राष्ट्र दयानन्द ! तुम्हें बारम्बार प्रणाम	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	क्या हमें अपने साध्य और साधनों का ज्ञान है ?	मनमोहन कुमार आर्य	०८
४.	अधर्म का फल तो मिलना ही है	महात्मा चैतन्यमुनि	१२
५.	गौ-वध अविलम्ब बन्द हो.	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	१६
६.	महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्गदर्शक है	खुशहालचन्द्र आर्य	१७
७.	वार्धक्य अभिशाप नहीं वरदान है	पं. राकेश आर्य	१९
८.	संयमित क्षात्र-धर्म के प्रतिष्ठाता-श्रीराम	मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति	२१
९.	प्रकाशपर्व - दीपोत्सव	आचार्य राजेन्द्र शर्मा	२४
१०.	जीवन के साथ मृत्यु भी बन गई प्रेरणा	आचार्य भद्रसेन	२६
११.	पुण्य स्मरण- स्व. रमेशचन्द्र श्रीवास्तव	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२८
१४.	होमियोपैथी से वायरल का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२९
१५.	समाचार दर्पण		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

thearyasamaj.org

होने नहीं आये थे, देश-प्रेम की भावना उन्हें वहां खींच लाई थी। कहना न होगा कि जिस बात को देश के स्वाधीनता-संग्राम के कर्णधारों ने बहुत बाद में जाकर अनुभव किया, स्वामी दयानन्द ने उसे उसी समय अनुभव कर लिया था। सम्पूर्ण राष्ट्र में एकता की स्थापना का उपयुक्त मार्ग खोज निकालने के लिए ही वे दिल्ली आये थे। देश की एकता ही उन्नति की साधक है, देश को पराधीनता के चंगुल से छुटकारा मिलना ही चाहिए, और यह काम राष्ट्रीय एकता से ही सम्पन्न होगा, यह बात स्वामी जी ने भली-भांति अनुभव कर ली थी। स्वामी जी ने सम्पूर्ण देश की उन्नति और राष्ट्रीय एकता पर विचार करने के लिए एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में केशवचन्द्र सेन, हरिदेशमुख, सरयैयद अहमद खाँ, हरिश्चन्द्र चिन्तामणि आदि भी पधारे थे। इस सभा में ही स्वामी जी ने राष्ट्रीय चेतना का शंखनाद करने वाली आर्यसमाज की स्थापना का विचार प्रस्तुत किया था। यही से स्वामी जी ने सम्पूर्ण देश की यात्रा का विचार बनाया। वे समूचे भारत में भ्रमण के लिए निकले और देश के प्रत्येक बड़े नगर में उन्होने आर्यसमाज की स्थापना की।

देश के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देकर देश को स्वाधीनता दिलाने वाली संस्था कांग्रेस बहुसंख्यक लोग आर्यसमाजी विचारधारा के ही थे। सच तो यह है कि कांग्रेस और आर्यसमाज एक प्रकार से पर्यायवाची जैसे हो गये। अधिकांश विद्वानों की यह दृढ़ धारणा है, आर्यसमाज ने स्वामी दयानन्द के आशीर्वाद को लेकर देश भर में एक जबरदस्त क्रांति की, जिससे देशभर में जागरण हुआ, देशभक्त बने, देश पर मर-मिटने की भावना जगी। आज कांग्रेस में आर्यसमाज के अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक है। हरिजन नेता भी प्रायः आज जो कांग्रेस अथवा अन्य दलों में दिखाई देते हैं, उन पर स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की कृपा रही है। अछूतोद्धार, नारी जागरण, साक्षरता-आंदोलन आदि की चेतना स्वामी जी ने ही जगाई थी।

देश जगाने का जो संकल्प स्वामी जी ने लिया था, वे उससे एक पग भी पीछे नहीं हटे। जिन दिनों देश में स्वराज्य का कोई नाम भी नहीं जानता था, उन दिनों स्वामी जी ने देश को सत्यार्थ प्रकाश और अपने देश में अपना राज्य का नारा दिया। स्वामी जी ने कहा था कि विदेशी शासन चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, अपने शासन से अच्छा नहीं हो सकता। स्वामी जी के ये विचार उनकी देशभक्ति और राष्ट्रीय भावना के प्रतीक है। स्वामी जी के ये विचार और लोकमान्य तिलक का यह नारा - स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है - समान ही है।

जिस समय करोड़ों की संख्या में लोग हिन्दू जाति से कटकर अलग हो रहे थे, उस समय स्वामी दयानन्द ने उन्हें हिन्दू बने रहने के साधन जुटाने में हाथ बटाया। आर्यसमाज की हरिजनोद्धार

thearyasamaj.org

की सेवा भुलाई नहीं जा सकती। राजनैतिक विचारों का आंकलन और सर्वेक्षण करने वालों का यह कथन सर्वथा सत्य है - स्वामी दयानन्द के बाद इन जातियों के लिए जो सुधार या अधिकार मिले थे, वे राजनैतिक रहे। किन्तु स्वामी जी वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होने पिछली शताब्दी में अपने प्रयत्न से अस्पृश्यता निवारण करके हरिजनों को गले लगाया। राष्ट्रीय जागरण के लिए जरुरी था कि देश में फैली कुरीतियों का अंत किया जाये। आर्यसमाज ने स्वामी जी के निर्देशानुसार यह कार्य भी किया। कुरीतियों को दूर करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता थी। शिक्षा के प्रचार और प्रसार की ओर भी स्वामी जी ने ध्यान दिया। देश में आज जितनी शिक्षा दिखाई दे रही है, उसमें लगभग आधी शिक्षा का बीजारोपण करने वाले स्वामी दयानन्द थे। उन्होंने अंग्रेजों से लोहा लेकर विदेशी शिक्षा-प्रणाली के मुकाबले भारत की प्राचीनतम शिक्षा-प्रणाली को पुनरुज्जीवित करने के लिए गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति की स्थापना की।

देश की मातृ-चेतना प्रसुप्त थी। स्त्रियों को पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा न थी। उन्हें भी ढोंगियों ने शूद्र का दर्जा दे रखा था। हर ओर से स्त्रियों की प्रगति के द्वार बन्द थे। सबसे पहले इस क्षेत्र में लोहा लेने के द्वार बन्द थे। सब से पहले इस क्षेत्र में लोहा लेने वाले भी स्वामी दयानन्द ही थे। सर्वप्रथम आपने ही स्त्री-शिक्षा के द्वार खुलवाये। स्वामी जी की कृपा से ही भारतीय नारी को वेदपाठ का अधिकार मिला। वे भी पुरुषों की भांति यज्ञोपवीत धारण कर सच्चे अर्थों में आर्या बनी।

स्वदेशी की भावना भी पहले पहल स्वामी जी ने ही जगाई। उन्होने देशवासियों को विदेशी वस्तुओं का परित्याग करके स्वदेशी वस्तुएँ अपनाने का परामर्श दिया। स्वदेशी के प्रसंग में ही यह बात स्मरण रखने यौग्य है कि स्वामीं जी ने भारतीय विचारों के वाहन के लिए भारतीय भाषाओं को प्रमुखता दी। आपने समस्त भाषाओं की मूल संस्कृतभाषा के उन्नयन का कार्य किया। देश की एकता के लिए गुजराती होते हुए भी आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इस दृष्टि से स्वामी दयानन्द और गुरु गोविन्द सिंह दोनों की ही देश-सेवा सराहनीय कही जावेगी। स्वामी दयानन्द ने अपने सारे ग्रंथ हिन्दी भाषा में ही लिखे, उनका अपने असीम योगदानों से भारत माँ का उद्धार करने वाले दयानन्द अज्ञान, अन्याय व अन्धविश्वास के खिलाफ आक्रोशात्मक रवैया अपनाने के कारण अपनों के बीच ही न केवल विरोध का सामना करना, अपितु जीवन तक बलिदान देना पड़ा। यह दृढ़मन्तव्य था, कि हिन्दी ही सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो सकता है।

-आचार्य कर्मवीर

thearyasamaj.org

उपादेयात्मक

- मनमोहन कुमार आर्य

'क्या हमें अपने साध्य और साधनों का ज्ञान है ?'

साध्य लक्ष्य या उद्देश्य को कहते हैं। साधन वह है जिसकी सहायता से साध्य या लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि हमें दिल्ली जाना है तो दिल्ली हमारा साध्य कहलायेगा। दिल्ली जाने के लिए हम पैदल, दो, पहिया वाहन, चार या अधिक पहियों के वाहन यथा कार, बस आदि अथवा रेलगाड़ी का प्रयोग कर सकते हैं। इसके लिए प्रयोजन और साधनों के प्रयोग के लिए आवश्यकता के अनुरुप धन आदि भी होना चाहिए। ऐसी अवस्था में पैदल चलना, गाड़ी की सहायता लेना तथा धन आदि साधन कहलाते हैं। इन साधनों का प्रयोग कर दिल्ली पहुंच जाते हैं और हम हमारे साध्य वा लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है।

यह तो बात हुई साध्य व साधनों की। **अब विचार करना है कि हमारे जीवन का असली साध्य क्या है ?** मनुष्य माता-पिता से जन्म लेकर संसार में आता है। जन्म क्यों होता है ? इसका उत्तर हमें ज्ञात करना है। हमारे वेद आदि शास्त्रों व ऋषि-मुनियों ने इस प्रश्न का उत्तर शास्त्रों के अध्ययन, उनके ज्ञान व अपने अनुभवों से दिया हुआ है, जिसका हमें मात्र अध्ययन कर चिन्तन करना है। हमारे वेदादि शास्त्र एवं महर्षि दयानन्द सहित ऋषि-मुनियों के ग्रन्थ बताते हैं कि मनुष्या का जन्म पूर्व जन्म में किये हुए अवशिष्ट कर्मों के फलों के भोग के लिए व साध्य को जानने व उसकी प्राप्मित के लिए पुरुषार्थ करने के लिए होता है। हम मनुष्य जीवन में जो कर्म करते हैं उनमें कुछ ऐसे होते हैं कि जिनका फल हमें साथ-साथ या इसी जन्म में मिल जाता है, यह क्रियामण कर्म कहे जाते हैं। **कुछ कर्म ऐसे होते हैं जो हमारे कर्मों के खाते में जमा हो जाते है और वह हमारे पुनर्जन्म या मोक्ष आदि में सहायक होते हैं।** यह जो कर्म किये जाते हैं इनमें एक तो अपने शरीर की रक्षा के लिए होते हैं, जिसमें भोजन, आवास, वस्त्र, स्वयं व अपने परिवार की शिक्षा-दीक्षा, परिवार में रोग आने पर उनकी चिकित्सा, सन्तानों के विवाह, वाहन आदि खरीदने के साथ भावी आपातकालीन स्थिति के लिए कुछ अतिरिक्त संग्रहित धन की व्यवस्था करनी होती है, जिसे धन के उपार्जन अर्थात् अध्ययन-अध्यापन, सेवा या नौकरी, स्वतन्त्र व्यवसाय, राजनीति, कृषि व अन्य-अन्य कार्यों से प्राप्मत किया जाता है। यह सब तो जीवनयापन के लिये किया जाता है। क्या जीवन यापन व सुख-दुःख भोगने के लिए ही हमारा जन्म हुआ है ? विचार व विवेचन करने पर ज्ञात होता है कि नहीं यह तो जीवन के महद् उद्देश्य के पूरक व आरम्भिक सोपान है। **जीवन का उद्देश्य अथवा साध्य तो इन सब कार्यों से भिन्न है। वह है - सुख व दुःखों की सदा-सदा अर्थात् बहुत लम्बी अवधि तक के लिए पूर्ण निवृत्ति व परमानन्द=सर्वश्रेष्ठ आनन्द की उपलब्धि या प्राप्ति।** क्या ऐसा सम्भव है कि हमें सुख व दुःख ही न हो और परम आनन्द अर्थात् सर्वश्रेष्ठ सुख की उपलब्धि हो जाये। वेद और वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन, विचार व चिन्तन से यह सिद्ध होता है कि यह सम्भव है और इससे पूर्व अनेकानेक मनुष्य सुख-दुःख जिसका कारण मनुष्य जन्म व मृत्यु होता है, इससे मुक्त होकर परमानन्द प्राप्त कर चुके हैं। आइये, अब इस परमानन्द और इसकी प्राप्ति पर विचार एवं इसकी विधि पर विचार करते हैं।

हमने उपर्युक्त संक्षिप्त विचार व चिन्तन में देखा कि हमारे सभी सुख व दुःख हमारे पूर्व जन्म व इस जन्म के अच्छे व बुरे कर्मों के कारण होते हैं। यदि हम कर्मों में आसक्ति अर्थात् फलों की इच्छा का त्या कर दें, उसी प्रकार जिस प्रकार से बुरे कर्मों के फल भोगने में हमारी प्रवृत्ति किचिंत भी नहीं होती, तो क्या होगा ? यह होगा कि हम जो अच्छे कर्म करेंगे वह इकट्ठे होते रहेंगे और अच्छे कर्मों का खाता बढ़ता रहेगा। इससे ऐसी स्थिति आयेगी की जब हमारे अच्छे कर्म १०० प्रतिशत हो जायेंगे एवं बुरे व पाप कर्म जिनका फल या कारण दुःख होता है, वह शून्य हो जायेंगे या बहुत कम रहे

thearyasamaj.org

जायेंगे। यह भी मान लीजिये कि इस अवस्था तक पहुंचने में जीवात्मा ने ईश्वर विचार, चिन्तन, ध्यान व समाधि का भी अधिकाधिक अभ्यास किया है और वह उसे प्राप्त भी हुई है। वह जान गया है कि ध्यान करने का अन्तिम परिणाम समाधि होती है और समाधि में इस संसार को बनाने व चलाने वाले तथा जीवात्मा को जन्म व मृत्यु प्रदान करने वाले परमात्मा वा ईश्वर का निर्भ्रान्त ज्ञान भी उस ध्यान करने वाले व्यक्ति को हो जाता है। जब वह समाधि में होता है तो उसका बाह्य संसार, जगत् या वातावरण से सम्पर्क विच्छिन्न हो जाता है और ध्यान कर रहा व्यक्ति ईश्वर के स्वरुप को अपना आत्मा में प्रत्यक्ष अनुभव करता है व साक्षात् करता है। यहां विचार करने की बात यह है कि हम सांसारिक पदार्थों को आंखों की सहायता से देखते हैं क्योंकि इनका स्वरुप ही परिमित आकार वाला व स्थूल होता है। आकार व आकृति को देखती अर्थात् अनुभव करती मनुष्य की आत्मा ही है। इसी प्रकार से समाधि में भी उस निराकार, ज्ञान स्वरुप सर्वज्ञ प्रकाश स्वरुप परमात्मा को हमारी आत्मा ही साक्षात् अनुभव करती है। जिस प्रकार से भौतिक जगत में हम वस्तुओं को उनके स्थूल व आकार वाले रुपों को देखते हैं इसी प्रकार से ध्यान व समाधि में ईश्वर को उसके सच्चिदानन्द, निराकार, प्रकाश स्वरुप, ज्ञानस्वरुप यथार्थ स्वरुप को देखा अर्थात् उसे साक्षात्, निर्भ्रान्त रुप में देखा व अनुभव किया जाता है। इसी को ब्रह्म साक्षात्मकार व आत्म साक्षात्कार कहा जाता है। यह ईश्वर-साक्षात्कार व निर्भ्रान्त अनुभव, जीवात्मा के सत्कर्मों अर्थात् पुण्यकर्मों का फल होता है। यह अवस्था तभी प्राप्त होती है जीवन में इसके लिए पात्रता आ जाती है व जब ईश्वर जीव पर कृपा करके अपना साक्षात् स्वरुप प्रदर्शित करते हैं। **सभी जीवों को इस स्थिति को प्राप्त करने के लिये ही यह मनुय जन्म मिला है इस ब्रह्म साक्षात्कार की स्थिति के प्राप्त होने पर ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य पूरा होता है।** इसी अवस्था को कहा जाता है कि मनुष्य जीवन का "**साध्य**" लक्ष्य अर्थात् ईश्वर की यथावत् प्राप्ति हुई है। इन अवस्था को प्राप्त होने के बाद मनुष्य जीवनमुक्त कहा जाता है और कालान्तर में मृत्यु होने पर ईश्वर उस जीवात्मा को मोक्ष अवस्था प्रदान करते हैं।

मोक्ष अर्थात् सभी दुःखों से पूर्णतः निवृत्ति की अवस्था। जब जीवात्मा को कुछ जानना होता है व कोई सात्विक इच्छा होती है तो वह ईश्वर के सान्निध्य व साक्षात् सम्बन्ध के हने से पूरी हो जाती है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु होने पर वह अपने यथार्थ स्वरुप=आत्मस्थ स्वरुप में विद्यमान रहते हुए अपने संकल्प शरीर से ईश्वर से युक्त होकर आनन्द की अनुभूति के साथ लोक लोकान्तरों का भ्रमण व विचरण आदि करता है व ईश्वर के कार्यों व सृष्टि को देखता है।

मित्रों, महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की और उसके १० नियम बनायें है। इन नियमों पर जब हम विचार करते हैं तो हमें लगता है पहला व दूसरा नियम तो मनुष्य जीवन के साध्य को ध्यान में रखकर बनाया गया है और शेष आठ नियम उस साध्य की प्राप्ति के साधनों को प्राप्त करने के लिये एक प्रकार से साधन है। पहले नियम में मनुष्य को ईश्वर के स्वरुप व कृतित्व से परिचय कराते हुए कहा गया है कि "**सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।**" यहां एक बात तो यह कही गई कि मनुष्य से भिन्न एक पृथक ईश्वर की सत्ता है जो सब सत्य विद्याओं का मूल कारण या आदि कारण है। उदाहरण के रुप में हम कम्प्यूटर साइंस विद्या को लेते हैं। इस नियम में गौण रुप से यह कहा गया है कि यह जो कम्प्यूटर विज्ञान की विद्या है, यह ईश्वर द्वारा संसार को बनाने में ही विद्यमान थी। ईश्वर इसका आदि व मूल कारण है। मनुष्यों, वैज्ञानिकों ने तो बस सृष्टि में उपल्ध विविध प्रकार के ज्ञान व नियमों की खोज की है, जिसे विज्ञान का नाम दिया गया है और उसका उपयोग वह वैज्ञानिक व अन्य मनुष्यादि लोग कर रहे हैं। यही हाल सभी सत्य विद्याओं का है। ईश्वर है तो सब विद्यायें है। ईश्वर न होता तो कोई भी विद्या न होती क्योंकि तब उसके न होने पर यह संसार ही न बनता। हम देश व दुनियां के सच्चे वैज्ञानिकों का श्रद्धापूर्वक हार्दिक धन्यवाद व उन्हें नमन करना चाहते हैं। उनका कार्य भी कुछ-कुछ हमारे ऋषियों की ही तरह आध्यात्मिक न होकर प्रकृति के अध्ययन से जुड़ा है, जिसमें कल्पनातीत नियमबद्ध पुरुषार्थ शामिल है। हम सभी मत-मतान्तरों के मठाधीशों, महन्तों व प्रवर्तकों से यह भी कहना चाहते हैं कि वैज्ञानिकों का अनुकरण

thearyasamaj.org

व अनुशरण करते हुए ईश्वर की बात करते समय वैज्ञानिकों की भांति पूर्ण सत्य की खोज कर ईश्वर का केवल सत्य स्वरुप ही अपने अनुयायियों में प्रस्तुत व प्रचारित करें और अज्ञान व स्वार्थ से ऊपर उठने का प्रयास करें। हमें लगता है कि अधिकांस मत-मतान्तरों में ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरुप का ज्ञान आज भी नहीं है इसलिये जो भी उपासना, पूजा व अन्य प्रक्रिय सभी संसार के मनुष्य कर रहे हैं वह मनुष्य जीवन के साध्य वा लक्ष्य में साधक न होकर बाधक लग रही है।

हम आर्यसमाज के लोग यूरोप आदि के वैज्ञानिकों के इसलिए भी आभारी है कि उन्होंने वैज्ञानिक अनुसंधान कर कागज व मुद्रण यन्त्रों का निर्माण किया जिससे हम वेदों की रक्षा कर सके। कल्पना कीजिए कि यदि वैज्ञाकिों ने कागज व मुद्रंण प्रेस की खोज व निर्माण न किया होता तो एक शताब्दी हुआ होता, तो महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज वेदों का संरक्षण व प्रचार-प्रसार वर्तमान व पूर्वकाल की भांति नहीं कर पाते। यदि महर्षि दयानन्द को वेदों की प्रति उपलब्ध भी हो जाती तो शायद उस देश-देशान्तर में प्रचारित करना कठिन होता क्योंकि उन्होंने जो सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदभाष्य आदि लिख कर सहस्रों प्रतियों में प्रचारित व प्रसारित किए उसके न होने पर प्रचार अत्यन्त सीमित होता।

हम कभी-कभी सोचते हैं कि आज हमारे पास साहित्य का प्रचुर भण्डार है। हमें लगता है कि प्राचीनकाल अर्थात् अब से ५०० वर्ष व उससे पूर्व यह सुविधा हमारे देशवासियों को सुलभ नहीं थी। अतः हम सौभाग्यशाली है कि आज सभी वेद अन्य अनेक वैदिक ग्रन्त हमारे घर पर है वह वह हमारी निजी सम्पत्ति है। हमारे पास केवल एक विद्वान का ही नहीं अपितु अनेक विद्वानों का भाष्य है। इसका श्रेय महर्षि दयानन्द व उनके अनुयायी वेदभाष्यकारों सहित हमारे यूरोपीय वैज्ञानिकों को भी है। इसके लिए महर्षि दयानन्द, वेदों के सच्चे अर्थ करने वाले वेदभाष्यकारों तथा सभी वैज्ञानिकों को भी हमारा नमन है।

आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सत्य स्वरुप का वर्णन किया गया है जो चारों वेदों के अध्ययन का महर्षि दयानन्द का निचोड़ व सार है। इसकी परीक्षा करने पर इस नियम में कहे गये एक-एक शब्द पूर्ण सत्य अनुभव होते हैं, हमारी आत्मा उसकी साक्षी देती है। इसकी आज तक किसी मत-मतान्तर के विद्वान ने आलोचना नहीं की जिससे इसका शत प्रतिशत सत्य होना सिद्ध है। आईये, आर्यसमाज के दूसरे नियम पर दृष्टि डाल लेते हैं - "**ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।**" महर्षि दयानन्द ने देश-देशान्तर को सभी लोगों के लिये ईश्वर के सच्चे स्वरुप का संक्षेप में यह वर्णन किया है। वेदाध्ययन कर ईश्वर के बारे में विस्तार से भी जाना जा सकता है। जितना महर्षि दयानन्द ने इस नियम में वर्णन किया है, इतना भी जानकर और उसे जीवन में धारण करने से मनुष्य जीवन का कल्याम हो सकता है व अनेकों का हुआ है। इन्हीं गुणों से साध्य की सफलता के लिए ईश्वर की उपासना प्रत्येक मनुष्य=स्त्री व पुरुष को करनी चाहिए। इन गुणों पर विचार व चिन्तन करने व ध्यानावस्था में इसमें खो जाने पर कालान्तर में समाधि अवस्था की सम्भावना बनती है। इसके साथ योगदर्शन का अध्ययन कर आध्यात्म विज्ञान व इसके रहस्यों को जाना जा सकता है। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की कृपा से यह सब ज्ञान पुस्तकों में हिन्दी भाषा में उपलब्ध है, जिसे हिन्दी के अक्षरों व शब्दों का ज्ञान रकने वाला अल्प शिक्षित व्यक्ति भी जान व समझ सकता है और अपने जीवन का कल्याण कर सकता है। महर्षि दयानन्द की यह संसार को बहुत बड़ी देन है।

आईये, अब अन्य ८ नियमों की चर्चा करते है।यह सब साध्य=ईश्वर प्राप्ति के एक प्रकार से साधन ही है। आर्यसमाज के तीसरे नियम में कहा गया है कि "**वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।**" यहां साधनों का मार्ग दर्शन करते हुये कहा गया है कि साध्य व साधनों को जानने के लिए ज्ञान व वेद की पुस्तकें है। उसे पढ़ने से साध्य व साधन दोनों का ज्ञान हो जाता है। चौथा नियम है कि "**सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने**

thearyasamaj.org

में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" यहां महर्षि दयानन्द बता रहे हैं कि साध्य को हम तभी पकड़ सकते है जब हम सत्य को ग्रहण करेंगे और असत्य को छोड़ेंगे तो प्रलय काल तक भी साध्य की प्राप्ति नहीं हो सककती। इसी प्रकार से पांचवे नियम में कहा गया है कि "**सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।**" इस नियम यह कहा गया गया है कि कर्म करने से पूर्व सत्य व असत्य का विचार कर लेना चाहिए। यदि पता न चले तो स्वाध्याय से या फिर अपने से अधिक विद्वान व बुद्धिमानों से परामर्श कर समाधान कर लेना चाहिए। यदि कोई काम असत्य हो गया तो वह साध्य की प्राप्ति में बाधक होता है। अतः यहां सावधान किया गया है कि कोई भी असत्य काम न हो अपितु सब काम सत्य अर्थात् धर्मानुसार ही करने चाहिये। "**संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना**", इस छठे नियम में भी साधक को प्रेरणा की गई है कि साध्य की प्राप्ति के लिये वह संसार, देश व समाज के लोगों की शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करे व कराये। इसमें यह भी शामिल है कि उसे अपनी भी तीनों प्रकार की उन्नति करनी है जो साध्य की प्राप्ति में सहायक एवं आवश्यक है। सातवें नियम में महर्षि दयानन्द आर्यसमाज के सदस्यों को उपदेश करते हैं है कि "**सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए।**" इस नियम में निर्दिष्ट तीन बातों का पालन करने से भी साध्य की निकटता होती है और विपरीत आचरण करने से साध्य से दूरी बनती है। आठवें नियम में महर्षि दयानन्द आधुनिक संसार के निर्माण की नींव रखते हुए कहते हैं कि "**अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।**" इस नियम के पालन करने से न केवल हमारा समाज व विश्व ही उन्नत व आधुनिक बनता है साथ ही अध्यात्म में भी तीव्रतम प्रगति की जा सकती है और साध्य शीघ्र प्राप्त व सफल किया जा सकता है। "**प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।**" यह समाज का नवम् नियम है जिसके पालन की आज के युग में सबसे अधिक आवश्यकता है। आज जो सामाजिक व आर्थिक विषमता है उसकी नींव में इस नियम के विरुद्ध व्यवहार का होना है। इस नियम का पालन भी साध्य की प्राप्ति में आवश्यक है और इसके विरुद्ध व्यवहार साध्य की प्राप्ति में बाधक है। अन्तिम दशम् नियम है कि "**सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें।**" यह नियम सद्कर्मों का प्रेरक और अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की हानि करने का विरोध कर रहा है और ऐसा करके ही हम अपने "**साध्य**" सर्वव्यापक ईश्वर के समीप हो सकतें हैं और उसे प्राप्त कर सकते हैं। अतः आर्यसमाज के सभी नियम साध्य व साधनों का वर्णन कर रहे हैं व उनके प्रेरक है। इस दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति को आर्यसमाज का अनुयायी व प्रचारक बनना चाहिये जिससे वह साध्य को यथाशीघ्र प्राप्त कर सके। हम यहां यह भी कहना चाहते हैं कि आर्यसमाज जैसे नियम विश्व में किसी धार्मिक व सामाजिक संस्था के नहीं है, राजनीतिक संस्थाओं के होने की आशा करना तो बन्ध्या के पुत्र के समान है।

प्रत्येक मनुष्य का साध्य ईश्वर की प्राप्ति व उसका साक्षात्कार है। इसके साधन ईश्वर का ज्ञान, ईश्वर की उपासना, सेवा, परोपकार, यज्ञ, अग्निहोत्र, माता-पिता-आचार्यों-गुरुजनों-सच्चे साधुओं व संन्यासियों आदि की सेवा व वेद का अध्ययन, अध्यापन व वेदाचरण के साथ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कार विधि आदि का अध्ययन भी है। यह जान लेने के बाद आवश्यकता है कि साधनों का उपयोग कर साध्य को प्राप्त करने के लिए संकल्पपूर्वक अग्रसर होना। ईश्वर आपके अवश्य सहायक होंगे, आप आरम्भ करें।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत।

हमें जो व्यवहार अपने लिये पसन्द न हो वह दूसरों से न करें।

thearyasamaj.org

विश्लेषणात्मक

- महात्मा चैतन्यमुनि

अधर्म का फल तो मिलना ही है

जब से आलस्य एवं प्रमाद के कारण वेद का पठन-पाठन छूटा, अनेक प्रकार के पाखण्ड एवं आडम्बर फैलाते चले गए। आज व्यक्ति ईश्वर, उपासना, धर्म, कर्म, यज्ञ, व्रत, तीर्थ, श्राद्ध तथा गुरु एवं गुरु मन्त्र आदि के वास्तविक महत्व एवं स्वरुप आदि को पूर्णरुप से विस्मृत कर चुका है। चार-धाम के सम्बन्ध में भी अनेक प्रकार की कल्पित मान्यताएं स्थापित करके व्यक्ति जीवन को बर्बाद कर रहा है। चारों दिशाओं में चार-धामों के नाम पर चार स्थान सुनिश्चित कर दिए गए हैं, जिनकी यात्रा करके व्यक्ति स्वयं को समस्त पापों से मुक्त होने तथा भवसागर से पार हो जाने की मिथ्या धारणा बनाए हुए हैं। वास्तव में यदि पापों से मुक्त होना इतना ही आसान है तो यह तो किसी के लिए भी असंभव नहीं है। लोग पैदल या किराया खर्च करके वहां पहंच सकते हैं। ये कल्पित किए गए धाम हैं - पूर्व में जगन्नाथ धाम, दक्षिण में रामेश्वरम् धाम, पश्चिम में द्वारकापुरी धाम और उत्तर में बद्रीनाथ धाम। इनमें से तीन भगवान विष्णु को समर्पित है और चौथा धाम रामेश्वरम, भगवान शिव को समर्पित है। बद्रीनाथ धाम उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में अलखनन्दा के तट पर स्थित है। लोगों की मान्यता के अनुसार जब तक व्यक्ति इस धाम की यात्रा न कर ले, उसकी तीर्थ यात्रा अधूरी ही रहती है। जगन्नाथपुरी धाम उड़ीसा प्रदेश में समुद्र के तट पर स्थित है। रामेश्वरम् धाम भारत की दक्षिण सीमा के अन्तिम स्थल पर स्थित है। यह स्थान पहले भूमि से मिला हुआ था, किसी भूगर्भीय परिवर्तन के कारण इस अन्तरीप का मध्य भाग दब गया और वहां समुद्र आ गया। इस तरह यह एक समुद्री द्वीप में स्थित है। द्वारकापुरी धाम सौराष्ट्र प्रदेश में समुद्र के किनारे स्थित है। समय-समय पर इन तथाकथित धामों से संबंधित अनेक काल्पनिक कथाएं एवं महात्म्य आदि भी लिख दिए गए हैं, जिनकी विस्तृत चर्चा हम यहां विस्तार भय से नहीं कर रहे है।

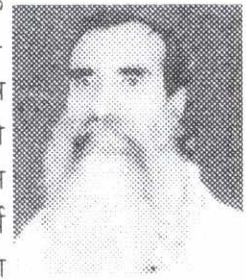

एक पौराणिक कथा के अनुसार जगन्नाथ धाम में सदाचार-भ्रष्ट पुण्डरीक तथा उसका मित्र अम्बरीष तपस्या करके पवित्र हो गए थे। यह मन्दिर राजा इन्द्रद्युम्न (इन्द्रमन) ने बनवाया था। आश्चर्य यह है कि मूर्ति में श्रीकृष्ण तथा बलराम की बहिन सुभद्रा को श्रीकृष्ण तथा बलराम के मध्य में बिठाया गया है। भारतीय शिष्टाचार के अनुसार एक वाम भाग में होने से पत्नी और दूसरे के दक्षिण भाग में होने से माता के समान होती है। काल्पनिक कथा में ऐसा नारद के कहने पर किया गया है ... यहां पर प्रसाद के रुप में भात ठेकेदारों के माध्यम से बिकता है ... इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में चर्चा की है। वहां प्रश्न किया गया - भला यह तो जाने दो। परन्तु जगन्नाथ में प्रत्यक्ष चमत्कार है। एक कलेवर बदलने के समय चन्दन का लकड़ा समुद्र में से स्वयंमेव आता है। चुल्हे पर ऊपर-ऊपर सात हण्डे धरने से ऊपर-ऊपर के पहिले-पहिले पकते हैं और जो कोई वहां जगन्नाथ की परसादी न खावे, तो कुष्ठी हो जाता है और रथ आप-से-आप चलता, पापी को दर्शन नहीं होता है। इन्द्रमन के राज्य में देवताओं ने मन्दिर बनाया है। कलेवर बदलने के समय एक राजा एक पण्डा एक बढ़ई मर जाने आदि चमत्कारों को तुम झूंठ न कर सकोगे ?

इसके उत्तर में महर्षि लिखते हैं - 'जिसने बारह वर्ष पर्यन्त जगन्नाथ की पूजा की थी, वह विरक्त होकर मथुरा में आया था, मुझसे मिला था। मैंने इन बातों का उत्तर पूछा था। उन्होंने ये सब बातें झूठ बताई। किन्तु विचार से निश्चय यह है कि जब कलेवर बदलने का समय आता है, तब नौका में चन्दन की लकड़ी ले समुद्र में डालते हैं। वह समुद्र की लहरियों से किनारे लग जाती है, उसको ले सुतार लोग मूर्त्तियां बनाते हैं।'

thearyasamaj.org

जब रसोई बनती है, तब कपाट बन्द करके रसोईयों के बिना अन्य किसी को न जाने न देखने देते हैं। भूमि पर चारों ओर छः और बीच में एक चक्रकार चूल्हे बनाते हैं। उन हण्डों के नीचे घी मट्टी और राख लगा, छः चूल्हों परचावल पका, उनके तले मांजकर उस बीच के हण्डे में उसी समय चावल डाल (उसके उपर उन छः हण्डों को रख) छः चूल्हों के मुख लोहे के तवों से बन्ध कर, दर्शन करने वालों को जो कि धनाढ्य हो बुलाके दिखलाते हैं। ऊपर-ऊपर के हण्डों से चावल निकाल, पके हुए चावलों को दिखला, नीचे के कच्चे चावल निकाल दिखाके उनसे कहते हैं - कि कुछ हण्डों के लिए रख दो। 'आंख के अन्धे गांठ के पूरे' रुपये अशर्फी धरते, और कोई कोई मासिक भी बांध देते हैं। शूद्र नीच लोग मन्दिर में नैवेद्य लाते हैं। जब नैवेद्य हो चुकता है, तब वे शूद्र नीच लोग जूंठा कर देते हैं। पश्चात् जो कोई रुपया देकर हण्डा लेवे उसके घर पहुंचाते और दीन गृहस्थ और साधु-सन्तों को लेके शूद्र और अन्त्यजपर्यन्त एक पंक्ति में बैठ जूंठा एक-दूसरे का भोजन करते हैं। जब वह पंक्ति उठती है, तब उन्ही पत्तलों पर दूसरों को बैठाते जाते हैं। महा अनाचार है और बहुतेरे मनुष्य वहां जाकर उनका जूंठा न खाके, अपने हाथ बना खाकर चले आते हैं। कुछ भी कुष्ठादि रोग नहीं होते और उस जगन्नाथपुरी में भी बहुत कुष्ठी है। नित्यप्रति जूंठा खाने से भी रोग नहीं छूटता। और यह जगन्नाथ में वाममार्गियों ने भैरवीचक्र बनाया है, क्योंकि सुभद्रा श्रीकृष्ण और बलदेव की बहिन लगती है। उसी को दोनों भाईयों के बीच में स्त्री और माता के स्थान में बैठाई है। जो 'भैरवीचक्र' न होता, तो यह बात कभी न होती।

और रथ के पहियों के साथ कला बनाई है। जब उनको सूधी घुमती है घूमती है, तब रथ चलता है। जब मेले के बीच में पहुंचता है, तभी उसकी कील को उलटी घुमा देने से रथ खड़ा रह जाता है। पुजारी लोग पुकारते हैं - दान देओ, पुण्य करो, जिससे जगन्नाथ प्रसन्न होकर अपना रथ चलावें, अपना धर्म रहे। जब तक भेंट आती जाती है, तब तक ऐसे ही पुकारते जाते हैं। जब आ चुकी है, तब एक ब्रजवासी अच्छे कपड़े दुशाला ओढ़कर आगे खड़ा रहके हाथ जोड़ स्तुति करता है कि - हे जगन्नाथ स्वामिन्! आप कृपा करके रथ को चलाइए, हमारा धर्म रक्खो। इत्यादि बोलके साष्टांग दण्डवत् प्रणाम कर रथ पर चढ़ता है और 'जय-जय' शब्द बोल सहस्त्रों मनुष्य रस्सी खींचते है, रथ चलता है। जब बहुत से लोग दर्शन को आते हैं, तब इतना बड़ा मन्दिर है कि जिसमें दिन में भी अन्धेरा रहता है और दीपक जलाना पड़ता है। उन मूर्तियों के आगे पर्दे खैचकर लगाने के पर्दे दोनों ओर रहते हैं। पण्डे पुजारी भीतर खड़े रहते हैं। जब एक ओर वाले ने पर्दे को खींचा, झट मूर्ति आड़ में आ जाती है। तब सब पण्डे और पुजारी पुकारते हैं, 'तुम भेंट धरो', तुम्हारे पाप छूट जाएंगे, तब दर्शन होगा। शीघ्र करो। वे बिचारे भोले मनुष्य धूर्त्तों के हाथ लूटे जाते हैं और झट पर्दा दूसरा खैच लेते हैं, तभी दर्शन होता है। जब जय शब्द बोल के प्रसन्न होकर धक्के खाके तिरस्कृत हो चले आते हैं।

'इन्द्रमन' वही है कि जिसके कुल में लोग अबतक कलकत्ते में है। वह धनाढ्य राजा और देवी का उपासक था। उसने लाखों रुपये लगाकर मन्दिर बनवाया था। इसलिए कि आर्यावर्त्त देश के भोजन का बखेड़ा इस रीति से छुड़ावे। परन्तु मूर्ख कब छोड़ते हैं? 'देव' मानो तो उन्हीं कारीगरों को मानो, कि जिन शिल्पियों ने मन्दिर बनाया। राजा पण्डा और बढ़ई उस समय नहीं मरते, परन्तु वे तीनों वहां प्रधान रहते हैं। छोटों को दुःख देते होंगे, उन्होंने सम्मति करके उसी समय अर्थात् कलेवर बदलने के समय वे तीनों उपस्थित रहते हैं, मूर्ति का हृदय पोला रखा है, उसमें सोने के सम्पुट में एक सालगराम रखते हैं कि जिसको प्रतिदिन धोके चरणामृत बनाते हैं। उस पर रात्रि की शयन आरती में उन लोगों ने विष का तेजाब लपेट दिया होगा। उसको धोखे से उन्हीं तीनों को पिलाया होगा, कि जिससे वे कभी मर गए होंगे। मरे तो इस प्रकार और भोजनभट्टों ने प्रसिद्ध किया होगा कि जगन्नाथजी अपने शरीर बदलने के समय तीनों भक्तों को भी साथ ले गए। ऐसी झूठी बातें पराए धन ठगने के लिए बहुत सी हुआ करती है।

रामेश्वर-धाम के सम्बन्ध में भी अनेक प्रकार की काल्पनिक गाथाएँ गढ़ ली गई है। एक पौराणिक कथा के अनुसार जब श्रीराम रावण का वध करने के बाद सीता सहित अयोध्या जा रहे थे तो मार्ग में वे गंधमार्दन पर्वत पर रुके।

thearyasamaj.org

उन्होंने वहां के ऋषि-मुनियों से पुलस्त्य वशंज रावण के वध से होने वाली ब्रह्महत्या के पाप से छुटकारा पाने का उपाय पूछा जो ऋषियों ने उनसे कहा कि वे इस क्षेत्र में शिवलिंग की स्थापना करें। हनुमान जी को शिवलिंग लाने के लिए भेजा गया मगर उन्हें बहुत विलम्ब हो गया। अतः सीता ने वहां बालू से बनें शिवलिंग की स्थापना कर दी। हनुमान शिवलिंग लेकर लौटे तो उन्हें बड़ी निराशा हुई। श्रीराम ने उनसे पूछा कि वे इस बालू के शिवलिंग को हटाकर अपने द्वारा लाए गए शिवलिंग की स्थापना कर लें मगर हनुमान द्वारा अपनी पूरी शक्ति लगाने पर भी वह बालू का लिंग नहीं हट सका। अतः हनुमान के द्वारा लाए गए शिवलिंग की स्थापना भी पास में ही कर दी गई।

महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ में प्रश्न उठाते हैं - जो रामेश्वर में गङ्गोतरी के जल चढ़ाते समय लिंग बढ़ जाता है, क्या यह भी बातें झूंठी है ? उत्तर - झूंठी। क्योंकि उस मन्दिर में भी दिन में अन्धेरा रहता है। दीपक रात-दिन जला करते हैं। जब जल की धारा छोड़ते हैं, तब उस जल में बिजली के समान दीपक का प्रतिबिम्ब छलकता है, और कुछ भी नहीं। न पाषाण घटे न बढ़े, जितना का उतना रहता है। ऐसी लीला करके बिचारे निर्बुद्धियों को ठगते हैं।

प्रश्न :- रामेश्वर को रामचन्द्र ने स्थापित किया है। जो मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध होती, तो रामचन्द्र मूर्तिस्थापना क्यों करते ? और बाल्मीकि जी रामायण में क्यों लिखते ?

उत्तर :- रामचन्द्र के समय में उस लिङ्ग वा मन्दिर का नाम चिह्न भी न था। किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्थ 'राम' नामक राजा ने मन्दिर बनवा लिङ्ग का नाम रामेश्वर धर दिया है। जब रामचन्द्र सीताजी को ले, हनुमान आदि के साथ लंका से चले, आकाशमार्ग में विमान पर बैठ अयोध्या को आते थे, तब सीता जी ने कहा था कि -

अत्र पूर्व महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः।
सेतुबन्ध इति विख्यातम्॥ (वा.रा.लं.का.)

'हे सीते ! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे, और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु-व्यापक देवों का देव 'महादेव' परमात्मा है, उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहां प्राप्त हुई। और देख, यह सेतु हमने बांधकर लंका में आके उस रावण को मार तुझको ले आए।' इसके सिवाय वहां वाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा।

द्वारिका-धाम के सम्बन्ध में महर्षि जी ने इस प्रकार लिखा है। प्रश्न - द्वारिका जी के रणछोड़ जी 'नर्सीमहता' के पास हुण्डी भेद जी, और उसका ऋण चुका दिया। इत्यादि बात भी क्या झूंठ है ?'

उत्तर - किसी साहुकार ने रुपए दे दिए होंगे। किसीने झूठा नाम उड़ा दिया होगा कि श्रीकृष्ण ने भेजे। जब संवत् १९१४ के वर्ष में तोपों के मारे मन्दिर-मूर्तियां अंग्रेजो ने उड़ा दी, तब मूर्ति कहां गई थी ? प्रत्युत बघिर लोगों ने जिती वीरता की और लड़े, शत्रुओं को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता, तो इनके धुर्रे उड़ा देता, और ये भागते फिरते। भला यह तो कहो कि जिसका रक्षक मार खाए, उसके शरणागत क्यों न पीटे जाएँ ? 'बद्रीनाथ-धाम के सम्बन्ध में महर्षि लिखते है - वैसे ही 'बद्रीनारायण' में ठगविद्यावाले बहुत बैठे हैं।'

वास्तव में इन तथाकथित व्रतों, तीर्थों तथा धामों के प्रचलन तथा अनेक प्रकार के पाखण्डो और आडम्बरो का मुख्य कारण यही है कि व्यक्ति अपने किए हुए पापों से बिना भोगे ही मुक्ति चाहता है। जबकि यह मान्यता एकदम ही शास्त्र विरुद्ध तथा बुद्धिगम्य नहीं है। बहुत प्रसिद्ध उक्ति है - **जैसी करनी वैसी भरनी**। दर्शनकार स्पष्ट शब्दों में कहते है- **कर्ता शास्त्रार्थत्त्वात्** (वे.द.२-३-३३) अर्थात् शास्त्र में बताए गए अर्थ वाला होने से आत्मा कर्ता है। अगले ही सूत्र में यह भी आत्मा का कर्ता होना सिद्ध है। अगले सूत्रों में आत्मा के यथेच्छ विहार-इच्छानुसार विचरण, आचरण के उपदेश से भी आत्मा का कर्ता होना सिद्ध है। अगले सूत्रों में भी आत्मा को कर्ता के रुप में विवेचित किया गया है - **उपादानात्। व्यपदेशाच्च क्रियायां न चेन्तिर्देशविपर्ययः। उपलब्धिवदनियमः। शक्तिविपर्यपात्।, समाध्यभावच्च, यथा च तक्षोभयता।, परात्तु तच्छुतेः।** (वे.ग.२-३-३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१) अर्थात् उपादान से ग्रहण करने से ग्रहिता होने से आत्मा कर्ता है। लौकिक वैदिक क्रिया में भी

thearyasamaj.org

आत्मा को कर्ता कहा गया है। यदि ऐसा न मानकर बुद्धि को कर्ता कहा जाता है तो इस विषय के वाक्य में जो निर्देश किया गया है उसका विपर्यय हो जाएगा। उपलब्धि के समान अनियम है। जैसे आत्मा इष्ट और अनिष्ट की उपलब्धि कहता है, ऐसे ही अनियम से प्रिय और अप्रिय का अनुष्ठान करता है। शक्ति के विपर्यय से, बुद्धि कर्ता नहीं केवल आत्माकर्ता है, समाधि के अभाव से भी। यदि बुद्धि को कर्ता माना जाए, तो समाधि का अभाव प्रसक्त होगा, इसलिए भी आत्मा को कर्ता मानना निश्चित होता है। जैसे बढ़ई लकड़ी काटते छीलते समय तथा यह सब न करते समय दोनों प्रकार की दशा में बढ़ई रहता है, ऐसे ही आत्मा इन्द्रिय-व्यायार और अव्यवस्थाओं में कर्ता रहता है। श्रुति प्रमाण से भी आत्मा ही कर्ता है। कर्म स्वातन्त्र्य के सम्बन्ध में डॉ. राधाकृष्ण जी 'ब्रह्मसूत्र' का भाष्य करते हुए वे लिखते है - यदि ईश्वर सृष्टि को मनमाने ढंग से बना पाता तो उसमें कहीं भी बुराई न दीख बड़ती, किन्तु वह ऐसा जीवात्मा की स्वतन्त्रता छीनकर कर सकता था। परमात्मा की सृष्टि में बुराई इसलिए है कि वह जीवात्मा की स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। अन्यत्र उन्होंने लिखा है - सृष्टि में स्वतन्त्र निर्णय लेने में समर्थ जीव है जिन्हें प्रभावित तो किया जा सकता है, किन्तु वश में नहीं किया जा सकता, क्योंकि परमेश्वर तानाशाह नहीं है। परमात्मा सत्कर्म करने के लिए आत्मा को प्रेरणा तो देता है, आदेश तो देता है मगर इस सम्बन्ध में वे लिखते है- भीतर से उद्भुत होने वाला विचार-परिवर्तन ही वास्तविक परिवर्तन है। शिक्षक का कर्त्तव्य अपने विचारों को थोपना नहीं, अपितु विचारों को प्रेरित करना है। हिन्दू-विचारधारा में बल या धमकी से नहीं, सुझाव व प्रेरणा से काम लिया जाता है। प्रश्न उठता है कि क्या कर्मों का फल अगले जन्म में ही मिलता है या इस जन्म में भी ... इसका समाधान यह है कि कुछ कर्मों का इस जन्म में और कुछ अगले जन्म में मिलता है। इस सम्बन्ध में योगदर्शन (२-१३) की व्याख्या करते हुए स्वामी सत्यपति जी लिखते है - जिस कर्मसमुदाय का, जाति, आयु, भोग निश्चित हो जाता है, उसको नियतविपाक और जिसके जाति, आयु और भोग निश्चित नहीं हुए, वह अनियतविपाक कहा जाता है। अनियतविपाक कर्माशय की तीन गतियां मानी जाती है। पहली - कुछ कर्मबहुत लम्बे काल के पश्चात् फल देते हैं, कर्मों की इस गति को व्यासभाष्य मे 'नाश' के नाम से कहा गया है। दूसरी किसी प्रधान कर्म के साथ मिलकर कर्म अपना फल दे देता है। तीसरी जब प्रबल कर्म अपना फल देते हैं, तो वह कर्म उनके नीचे दबा रहता है और अनुकूल वातावरण आने पर अपना फल देता है। वास्तव में कोई भी कर्म बिना फल के दिए नष्ट नहीं होता। कर्म और कर्मफल का जानना अतिपरिश्रम साध्य है। किस कर्म का क्या, कितना, कब, कैसे फल मिलेगा, इसको पूर्णरूपेण ईश्वर ही जान सकता है... 'इससे स्पष्ट हुआ कि किन्ही कर्मों का फल इसी जन्म में और किन्ही का अगले जन्म में होता है। बिना भोगे कर्म कभी भी व्यक्ति का पीछा नहीं छोड़ते हैं। इस सम्बन्ध में संस्कार विधि (गृहस्थ प्रकरण) में लिखा गया है - 'मनुष्य निश्चय करके जाने कि इस संसार में जैसे गाय की सेवा का फल दूध आदि शीघ्र नहीं होता वैसे ही किए हुए अधर्म का फल शीघ्र नहीं होता, किन्तु धीरे-धीरे अधर्म कर्ता को सुखों को रोकता हुआ सुख के मूलों को काट देता है पश्चात् अधर्मी दुःख ही दुःख भोगता है, पर बिना भोगे कर्म कभी भी व्यक्ति का पीछा नहीं छोड़ते हैं।' उपरोक्त विवेचन से यह भली प्रकार से स्पष्ट हो गया कि बिना भोगे व्यक्ति के कर्म कभी भी क्षीण नहीं होते हैं। स्वयं परमपिता परमेश्वर भी व्यक्ति के किये हुए कर्मों को क्षमा नहीं कर सकता फिर किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा या किसी स्थान विशेष में जाकर किए हुए पाप कैसे क्षमा हो सकते हैं ? इसलिए भवसागर से पार उतरने के लिए जिन तथाकथित व्रतों, तीर्थों तथा धामों आदि की कल्पनाएं कर रखी है, उनका इस रुप में कोई महत्व नहीं है, क्योंकि व्यक्ति के कर्म ही उसे अच्छी या बुरी गति देने का कारण है। अतः व्यक्ति को अपने कर्मों को ही सुधारना चाहिए। यह एक ध्रुव सत्य है कि कोई भी कर्म करने के बाद उसके फल की व्यवस्था परमात्मा के हाथ में चली जाती है, मगर परमात्मा की बड़ी कृपा यह है कि उन्होंने हमें कर्म करने में स्वतन्त्र रखा है। अतः हमें इस कर्म-स्वतन्त्रता का लाभ उठाकर अपने जीवन में पुण्य कर्मों का संचय करना है, इसी में जीवन की सार्थकता है।

पता : महादेव, सुन्दरनगर, हि.प्र. १७४४०१

thearyasamaj.org

गावो विश्वस्य मातरः गौ-वध अविलम्ब बन्द हो

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

गौवध अविलम्ब बन्द होना चाहिए। देश को स्वतन्त्रता मिलने से लेकर अब तक गौवध रोकने हेतु सहस्रों आन्दोलनों से निकलना पड़ा है, अनेक सरकारें यहां आई परन्तु बेचारी गौ के लिए कोई कानून नहीं बन सका। आज भी भारत में लाखों गायें प्रतिदिन काटी जाती है, जो कि देशवासियों के लिए शर्म की बात है।

आज की सरकार से भी यही आशा है कि गौहत्या के विरुद्ध कानून बनना चाहिए। निरीह भोले मूक पशुओं की हत्या क्या भारत के हित में है ? गायें आज भी कट रही है जो कि कटने के समय जोर से रम्भाती फड़फड़ाती है।

यदि हमारे शरीर पर कोई शस्त्र चलाये तो कितना दुख होगा यही स्थिति सतीप्रथा की। जब पुरुष की मृत्यु होती थी तो उसकी पत्नी को जीवित ही पुरुष के साथ चिता में जलाया जाता था। सन् १८११ की बात है राजा राममोहन राय के बड़े भाई जगत मोहन की मृत्यु होने पर उनकी पत्नी को पति के साथ चिता में जलने के लिए बाध्य किया गया, उस समय ऐसी प्रथा थी कि पति की मृत्यु पर उसके साथ उसकी जीवित पत्नी को चिता में जला दिया जाता था। राममोहनराय यह दृश्य देख रहे थे, जब जगतमोहन की पत्नी को आग की लपटों की जलन सहन न हुई तो वह चिता से उठकर भागने लगी, ऐसे में उसे बलपूर्वक रस्सियों से बांध कर चिता पर जबरदस्ती बैठा दिया, दर्द व तड़प से जब वह चीत्कार करने लगी तो वहां उपस्थित जनसमुदाय में ढोल व नगाड़े तेजी से बजाकर उस अबला की आवाज को दबा दी गई। चीत्कार करती उसके दारुण स्वर को राममोहन राय कभी भूले नहीं। राममोहन राय ने इस हेतु आन्दोलन चलाया फलस्वरुप सन् १८२९ ई. में ऐसी हृदय विदारक प्रथा को बन्द कराने में सफलता मिली, लार्ड बैन्टिक ने इस प्रथा को बन्द कर दिया।

ऐसा ही वर्तमान में गौ के साथ हो रहा है जो कटते समय दारुण-चीत्कार करती हैं गाय। भारत में पवित्रता के लिए पहचानी जाती है। उसे प्रजा को पालने वाली कृषि में शत प्रतिशत सहयोगी व माता का स्थान दिया गया है। यह भारतवासियों आर्यों (हिन्दुओं) के लिए श्रद्धा का विषय है। आज गाय के लिए भी कानून बनना चाहिए।

उस समय में देश परतन्त्र था विदेशी अंग्रेजों को भी सती प्रथा के प्रति उसे बन्द करने को बाध्य होना पड़ा था। लार्ड बैन्टिक ने सरकारी कानून बनाया सती प्रथा बन्द की गई। आज सती प्रथा नहीं होती। उसी प्रकार गायें काटी जाती है इनके लिए भी आज की भारत सरकार को तुरन्त कानून बना देना चाहिए कि गौ वध नहीं होगा यदि ऐसा पाया गया तो उसे फांसी पर चढ़ा दिया जाएगा अर्थात् दोषी को प्राण दण्ड होगा।

अपितु गौ संवर्धन हेतु संस्थान बनने चाहिए, जैसा कि कृषि अनुसंधान केन्द्र, गन्ना अनुसंधान केन्द्र, कपास अनुसंधान केन्द्र, बीज संवर्धन व अन्वेषण की प्रयोग शालायें भारत में वैज्ञानिकों को लेकर चलाई जा रही है। गौ के लिए भी उनके रक्षा विकास व संवर्द्धन हेतु संस्थान बनने चाहिए। जहां गौ वंश की वृद्धि हेतु अच्छे अच्छे वैज्ञानिक हो तथा भारत के प्रत्येक बड़े कसबे व ग्राम तथा नगर में इनके लिए फार्म हो, जहां इन पर पूरा ध्यान अन्वेषण हेतु होना चाहिए। दूध, खाद, घी बायोगैस आदि व औषधियों व खाद्य पदार्थ मिलेंगे। रोजगार मिलेगा भारत की समृद्धि बढ़ेगी विकास होगा प्रदूषण से निजात मिलेगी।

गौ हमारे भारतीय जीवन व कृषि की धुरी है इसकी ओर अविलम्ब ध्यान देकर कानून आदि बनाकर गौ हत्या पर रोक लगानी चाहिए।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

thearyasamaj.org

"महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्गदर्शक हैं"

मैंने पहले एक लेख आदरणीय डॉ. महेश जी विद्यालंकार की पुस्तक "ऋषि दयानन्द की अमर गाथा" शीर्षक से लिखा था। उस लेख में एक लेख और इसी पुस्तक से लिखने की बात लिखी थी, सो दूसरा लेख भी इसी भांति है। - खुशहालचन्द्र आर्य

स्पृहणीय व्यक्तित्व

ऋषिवर दया, करुणा और मानवता के सागर थे। वे सदा गाली देनेवाले को फल व मिठाईयां, जहर देने वाले को क्षमादान तथा विरोधियों को सम्मान देते थे। वे कभी अपने सुख-दुःख के लिये न चिन्तित हुए और न रोये, मगर देश, धर्म, जाति की दुर्दशा, नारी की दुर्गति और देश में फैले हुये अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम पर निरन्तर व्यथित होते रहे और उसे दूर करने के लिये संघर्ष करते रहे। उन्हें सदा यही पीड़ा व्यथित किये रहती थी - भारत पुनः जगद्गुरु के गौरव पद पर कैसे प्रतिष्ठित हो ? धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर फैली हुई मनगढ़न्त पोप-लीलाएँ कैसे दूर हों। इन झूठे पाखण्डी गुरुओं, महन्तों, सन्तों आदि की इन भोली-भाली जनता को बहकाने, ठगने की प्रवृत्ति पर कैसे विराम लगे ? देश सत्य ज्ञान एवं विद्या के प्रकाश से प्रकाशित होकर, कैसे दुःख, दैन्य, निर्धनता, रोग-शोक, पशुता आदि से मुक्त हो। ऋषि की मार्मिक पीड़ा यही रही है :-

इक हूक सी दिल में उठती है, इक दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है ॥

ऋषि सदा देश के दुर्भाग्य, दुर्गति, कलह, पतन एवं परस्पर की फूट पर रोये। जो देश कभी शान्ति, सुख, मानवता और धन-धान्य का भण्डारी था। आज वह कितनी दीन-हीन अवस्था में है। यह पीड़ा उन्हें सदा बेचैन रखती थी। एक दिन प्रयाग में स्वामी जी गंगा के किनारे बैठे हुए प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, उन्होंने देखा- एक माता मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाये हुए गंगा में प्रविष्ट हुई, कुछ गहरे पानी में जाकर उसने बच्चे के शरीर पर लपेटा हुई कपड़ा उतार लिया, रोते बिलखते हुए बालक के शव को उसने पानी में प्रवाहित कर दिया। ऋषि इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर अपने को संभाल नहीं सके। करुणा स्वर से बोले - हाय ! हमारा देश इतना निर्धन हो गया है कि मृतक शरीर को कफन भी नहीं जुड़ता ? उनकी आंखों से आंसुओं की धारा अविरल बहने लगी। कभी यह भारत धन-धान्य, ऐश्वर्य और विभूतियों से भरा था। सोने की चिड़िया कहलाता था, आज देश की यह दयनीय दशा है ? वे देश की निर्धनता तथा दुर्दशा पर घण्टों चिन्तन-मनन करते रहे।

ऋषि दयानन्द ने देश भर का भ्रमण किया, उन्होंने व्यक्तित्व, वाणी तथा लेखनी से सभी को प्रभावित किया। जिधर से निकले उधर ही वैचारिक क्रान्ति, सत्य तथा वेदानुकूल विचारों की छाप छोड़ते गये। अनेक राजे-महाराजे, धनी-मानी उनके शिष्य बन गये। बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानों से उनके शास्त्रार्थ हुए। सभी उनकी विद्या, बुद्धि तथा तेज और बल से प्रभावित थे। उन्होंने दुनियां को झुकाया, पर स्वयं नहीं झुके। दूसरों को बदला, पर स्वयं नहीं बदले। जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसके विचारों और जीवन का कायाकल्प हो गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण था। घोर शत्रु भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे। ये दिव्य गुणों के खान थे। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरक, आदर्श, शिक्षाप्रद और नवजीवन दायक था। उनके दिव्य जीवन से न जाने कितनों ने अपने जीवन संभाले और ऊपर उठे। प्रेरक घटनाओं, बातों और उपदेशों से इतिहास भरा पड़ा है। ऋषि का जीवन दर्शन हमारे लिये मील का पत्थर है।

भोगी, विलासी, दुर्व्यसनों में फंसे मुन्शीराम के जीवन को ऋषि के एक भाषण ने बदल दिया। उनके जीवन ने ऐसी करवट बदली कि मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। स्वामी श्रद्धानन्द ने देश, धर्म, जाति के लिए जो प्रेरक कार्य

thearyasamaj.org

किये हैं, वे हमेशा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। यदि हम जीवन उत्थान, निर्माण तथा देश धर्म, जाति आदि की सेवा का पाठ व शिक्षा लेना चाहे तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढ़कर कोई प्रेरक जीवन न मिलेगा।

मुन्शीराम की तरह ही अमीचन्द का जीवन भी बुराईयों तथा दोषों से भरा हुआ था। किसी सभा में ऋषिवर के प्रवचन से पूर्व उन्होंने भजन सुनाया। भजन बड़ा ही मधुर था। लोगों ने अमीचन्द के बारे में ऋषिवर को बता रखा था। सहज ही ऋषि जी की सत्यवाणी निकली - अमीचन्द ! तुम होतो हीरे, मगर कीचड़ में गिरे हो। इस प्रेरक व प्रभावी वाक्य ने अमीचन्द के जीवन को पलटकर रख दिया। बाद में इसी अमीचन्द ने भजनों के माध्यम से आर्यसमाज का बड़ा प्रचार व प्रसार किया। ऋषि की वाणी और नजर में एक अद्भुत जादू था, जो सिर पर चढ़कर बोलने लगता था। मृत्यु का अन्तिम दृश्य-ऋषि की सहनशक्ति, आस्तिकता, प्रभु भक्ति, मृत्यु से निर्भयता आदि को देखकर नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक बन गये। उनके विचार बदल गये। उन्होंनें सारा जीवन ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया।

पं. लेखराम, ऋषि के जीवन और विचारों पर इतने दीवाने हुए कि सारा जीवन मुसाफिरी में गुजार दिया। ऋषि मिशन पर बलिदान होकर आर्यजनों को सन्देश दे गये - तकरीर और तहरीर का काम बन्द न होने देना।

महात्मा हंसराज ने सारा जीवन सादगी, त्याग, सेवा और फकीरी में रहकर ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया। ऋषि के जीवन चरित्र को देखकर न जाने कितने दीवाने, मस्ताने और जुनून वाले बने हैं, उन सभी को स्मरण करना सीमित स्थान में सम्भव नहीं है। उन सभी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को स्मरण व नमन।

ऋषि के जीवन की अनेक प्रेरक उदाहरण, घटनाएं व बातें है, जो आज के जीवन और जगत को संभलने, सुधरने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती है। स्वामी जी का जीवन खुली किताब था। उनकी कथनी और करनी एक थी। उन्होंने जो कहा उसे कर दिखाया। प्रभु विश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था।

महर्षि दयानन्द ने जीवन भर गलत बातों, ढोंग, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अन्धविश्वास आदि से कभी समझौता नहीं किया। यदि किया होता तो वे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े भगवान होते। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय गुणों तथा यौगिक सिद्धियों से परिपूर्ण था। मगर वे इतने महान व निरहंकारी थे, सदा साधारण मानव बनकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। हम आर्यजन स्वार्थ, लोभ, पद आदि के लिये कदम-कदम पर सिद्धान्त विरुद्ध बातों से समझौता करने के लिये तैयार हो जाते है। असत्य बातों से आत्मा को पवित्र कर लेते हैं। हमें ऋषि क प्रेरक जीवन से शिक्षा व सत्य पालन का व्रत लेना चाहिए।

पता : गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८० महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला), कोलकाता-७००००७

बोध-कथा

सम्पदा बनाम सम्पत्ति

शिष्य ने गुरु से पूछा - 'देव ! आप कहते हैं कि सारी सम्पदा इस जगती में भगवत् प्रदत्त है। पर हम दैनंदिन जीवन में देखते हैं कि व्यक्ति अपने पुरूषार्थ से सम्पत्ति एकत्र करता है जबकि भगवान की उपासना, पूजा, अर्चना, प्रार्थना, मनुहार का तो उसमें कोई योगदान भी नहीं होता।' गुरु बोले - वत्स ! यदि मनुष्य के पास भगवान की दी हुई दैवी सम्पदा समय, श्रम व सुदृढ़ स्वास्थ्य न हो तो वह साधन सम्पन्न बन भी जाता है तो यह नहीं मानना चाहिए कि वह अपना उद्देश्य पा गया। जरा सा भी भटकने पर ऐश्वर्य में प्रमाद, श्रम से जी चुराना, इन्द्रिय असंयम, विचारों की कुमार्गगामिता अथवा बिखराव एवं समय की हानि इनमें से एक घुन भी लग जाने पर वह फिर खोखला हो जाता है और अर्जित सम्पदा खो देता है। सम्पत्ति और सम्पदा संबंधी अपनी जिज्ञासा का समाधान तर्क-तथ्य पूर्ण सुनकर शिष्य संतुष्ट हो गया।

thearyasamaj.org

वार्धक्य अभिशाप नहीं, वरदान है

(जाने जीवन की कला) **१ अक्टूबर-अन्तर्राष्टीय वृद्ध दिवस**

- पंडित राकेश आर्य

'वृद्ध' शब्द साधारणः शक्तिहीनता, गतिशून्यता और जर्जरता का प्रतीक माना जाता है। संस्कृत में एक शब्द है - 'वृद्धि'। यह शब्द सामान्यतः बढ़ोतरी, वृद्धि या उन्नति का सूचक है। आचार्य पाणिनी ने इसी शब्द से व्याकरण शास्त्र का आरम्भ किया है। आचार्य के अनुसार वृद्ध वही है जो वृद्धि को प्राप्त कर लें। **'वृद्धिर्यस्य सोऽयं वृद्धः।'** इस दृष्टि से वृद्ध शब्द गरिमा तथा पूर्णता का परिचायक है। भारतीय संस्कृति में वृद्ध को कभी भी असम्मान की दृष्टि से नहीं देखा गया है। भारतीय मनीषियों ने वार्धक्य को हमेशा ससम्मान स्मरण किया है। भारत की परम्परा ने वृद्धों में ज्ञान और अनुभव की वृद्धि को देखकर उन्हें लोकोपकारक माना है। इसलिए ज्ञानवृद्ध वयोवृद्ध इत्यादि शब्दों का प्रचलन हुआ। वृद्धों की गरिमा को प्रकट करते हुए किसी ने कहा है -

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्॥

यहां वृद्धों को अभिवादन करने से आयु, विद्या, यश और बल के बढ़ने की बात कही गई है। वृद्ध शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसकी गरिमा हम वृद्धों ने ही कम की है। लक्ष्यहीनजीवन और वर्णाश्रम व्यवस्था के लोप ने वृद्धों की स्थिति को अत्यन्त दयनीय बना दिया है। उनका सम्मान न तो घर में है, और न ही समाज में।

वृद्धों की समस्याएँ -

वृद्धों की समस्याएँ हैं -१. अकेलापन २. गिरता स्वास्थ्य ३. आर्थिक स्थिति ४. समय या सेवानिवृत्ति।

वृद्धों की समस्याओं पर सरकार और समाज में चर्चा होती रहती है। कभी कानून बनाने की बात होती है, तो कभी पेंशन देने की। चित्रपट पर 'बागबान' और 'मुन्नाभाई' समाज में वृद्धों की स्थिति को यदा-कदा उठाते भी हैं, किन्तु समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल हो रही है। भारतीय समाज में 'वृद्धाश्रम' बनाये जा रहे हैं, यह वृद्धों के साथ सबसे बड़ा अन्याय है। यहाँ वानप्रस्थ हों, सन्यासाश्रम हो, जहां वृद्ध स्वेच्छा से जीवन में तप और ज्ञान की वृद्धि के लिए जाये। वृद्धाश्रम मजबूरी है इच्छा नहीं, मजबूरी को आदर्श नहीं कहा जा सकता।

समाधान - सीनियर सिटीजन्स पर आयोजित सभी सेमिनार आरोप और प्रत्यारोप में निकल जाते हैं। समस्याएं यथावत् रहती है। हमें अपनी समस्याओं का समाधान खुद ही निकालना होगा।

१. वृद्ध अकेले रहने की प्रवृत्ति को छोड़ें। परिवार के सदस्यों और समाज के वर्गों मेल जोल बढ़ाये। इस उम्र में अपनी सामाजिक सक्रियता को धीरे-धीरे बढ़ाये। एक घर में कैद होने की प्रवृत्ति से वृद्ध असुरक्षित हो रहे हैं। भ्रमण, मनोरंजन तथा समाचार पत्रों को पढ़ना न भूलें। भावी-पीढ़ी के साथ अधिक से अधिक समय बितायें। जहां तक संभव हो, आत्मनिर्भर बने रहें।

२. स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। योग-साधना को अपनी दिनचर्या का अङ्ग बनायें। अपने विचारों में सकारात्मकता लायें। आध्यात्मिक सत्संग करें। नकारात्मक विचारों को दूर रखें। व्यवहार को लचीला बनाये रखें। परिजनों की अनदेखी या छोटी मोटी गलतियों को 'नाक' का मुद्दा न बनायें।

३. अपने जीवन की प्लानिंग ऐसे करें कि उम्र के इस पड़ाव में परावलम्बी न बनना पड़े। जीवन को संयमी बनायें, फिजूल खर्ची से बचें। इंश्योरेंस, पेंशन या अपनी अचल सम्पत्ति का एक निश्चित हिस्सा स्वयं तथा अपने जीवन साथी के लिए अवश्य रखें।

४. सेवानिवृत्ति को सेवाप्रवृत्ति बनायें। साधारणतः व्यक्ति सेवा निवृत्ति को अपनी सेवा या अपने कार्यों की समाप्ति मान लेता है, इसलिए समय काटने लगता है और बुढ़ापा हावी होने लगता है। सतत क्रियाशीलता हमारी

thearyasamaj.org

कार्यक्षमता को बढ़ाती है। अमिताभ बच्चन और देवानन्द के सदाबहार होने का यही रहस्य है। वार्धक्य में धार्मिक सेवा केन्द्रों, सत्संगों तथा सामाजिक कार्यों में स्वयं को प्रवृत्त करें।

स्वामी रामतीर्थ एक बार विदेश प्रवास में थे। उन्होने कांपते हुए एक वृद्‌ध के हाथों में एक किताब देखी। वह वृद्‌ध कुछ सीखने का प्रयास कर रहा था। उसकी उम्र ८०-९० के आसपास थी, स्वामी जी ने उससे पूछा तो उस वृद्ध ने बताया कि वह चीनी भाष सीख रहा है। चीनी भाषा दुनिया की कठिनतम भाषाओं में है। उम्र के इस पड़ाव में उसे लिखने की इच्छा यह अप्रतिम जिजीविषा का एक उदाहरण है। स्वामी जी ने अपनी डायरी में लिखा है - इसे वृद्‌ध कौन कह सकता है। इसकी जिजीविषा युवाओं से अधिक प्रबल है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रसंगवश सत्यार्थप्रकाश में एक श्लोक उद्‌धृत किया है - **न तेन वृद्‌धो भवति येनास्य पलितं शिरः।**

ऋषि की दृष्टि में झुर्रियों के आ जाने उम्र के बढ़ जाने से आदमी वृद्ध नहीं होता- ज्ञान, तप और अनुभव की वृद्धि से ही व्यक्ति वृद्‌ध बनता है, इसीलिए वयोवृद्‌ध से ज्ञानवृद्‌ध बड़ा होता है। आइये, इस अन्तर्राष्ट्रीय वृद्‌ध दिवस पर संकल्प लें कि हम 'वृद्‌ध' बनेंगे, बूढ़े नहीं। जीवन भर ज्ञान, तप, अनुभव, सत्य, पुण्य, तेज, बल और यश की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

वृद्‌धत्व वरदान है, अभिशाप नहीं।

पता : **सुमन ट्रेडर्स**, नेहरु नगर, रायपुर (छ.ग.)

वृद्ध दिवस पर विशेष

-: मानव जन्म :-

– **सुभाषनारायण भालेराव** 'गोविन्द'

वृद्धाश्रम में दादी दादा जी से कहन लगी
कहिये न ?
अब जिन्दगी जीना किसलिये
बच्चे और बहुयें और किसके लिये ?
यहां कौन है अपना? और कौन है पराया ?
कोई भी नहीं पूछता, परिवार है तो बेकार
हमारा शरीर अब थका जा रहा है
अपनी लड़की भी है पर ना के बराबर
उसकी विदाई से वह अब अपनी नहीं
वह होकर भी पराई है
आखिर दादा जी ने दादी जी से कहा
जो हो गया उसे भूलो आगे की देखो, सोचो
दुःखी जीवन क्यों न हो मत हताश हो तुम
मनुष्यों को अब जोड़ दोष देना तू अब छोड़
अच्छे लोग भी मिलेंगे मीठा मीठा अब तू बोल
संकट पर हावी होंगे दुर्बल लोगों के साथ देगें
विकलांगो को हाथ देंगे वो ऊपर वाला जो है
एक ही करने वाला है
जो करवाता है कर्ता है
परीक्षा ले रहा है जीवन की
मानव जीवन में जीवन एक बार देकर
वृद्ध जीवन एक सबक है
जीवन जीना किसलिये
अपना अन्तर्मन से सवाल उठता है
सत्कर्म करो आनन्द करो उत्तर की उम्मीद छोड़ो
मानव जन्म को खुशी खुशी में
आनंद से स्वीकार करो।

पता : अवन्तिका ए-३८, न्यू नेहरु कालोनी,
ठाटीपुर मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)

thearyasamaj.org

-: विजयादशमी पर्व पर विशेष :-

संयमित क्षात्र-धर्म के प्रतिष्ठाता-श्रीराम

– मनुदेव 'अभय' विद्या वाचस्पति, एम.ए.

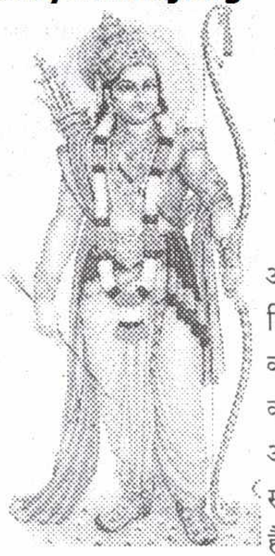

हम सब राम को मानते हैं,

अतीत चिरस्मरणीय

अपने अतीत को कभी भी भुलाना नहीं चाहिए। गौरवशाली भूत, वर्तमान को स्वर्णिम बनाने हेतु ऊर्जा प्रदान करता है। वर्तमान में खड़े होकर अतीत को स्मरण करते हुए भविष्य को और अधिक उज्ज्वल बनाने का सतत् प्रयत्नशील होना चाहिए। जो इस मौलिक सिद्धान्त का ध्यान रखकर आचरण करते हैं वे अपना भविष्य स्वर्णिम बनाने में सफल होते हैं।

किन्तु राम की बातें नहीं मानते।

अनेक विद्वानों का यह कथन अत्यन्त सारगर्भित है कि जो इतिहास जितना पुराना होता है वह उतना ही गौरवशाली होता है। विश्व के अनेक देशों में चाहे यह तथ्य सही सिद्ध न होता हो, परन्तु विश्व के इस प्राचीनतम देश 'भारत' पर उपरोक्त कथन अकारण सत्य है। ब्रिटिश साम्राज्य के अनेक कूटनीतियों ने भारत में हीनता का प्रभाव प्रचारित करने के लिए हमारे महापुरुषों, भारतीय वैदिक धर्म, संस्कृति सभ्यता, परम्पराओं और रीति-रिवाजों का बड़ा उपहास किया। दर्दजश हमारे ही देश में इन विदेशियों के विचारों के समर्थक कुछ कथित तथा विद्वान उनकी हाँ से हाँ मिलाने लग गये। ऐसे देशद्रोही तत्त्व शासकों का उच्छिष्टखनि और चाटने में ही अपने भाग्य को सराहने लगे। यहां तक कि अपने उज्ज्वल अतीत, ऋषि-मुनियों तथा महापुरुषों के अस्तित्व से भी इंकार करने में शर्म नहीं महसूस करते। विदेशी भी चाहते थे। प्रो. मेक्समूलर तथा लार्ड मैकाले भी यही चाहते थे। डेर्विन ने सोचने की स्थिति बदल दी।

इस संबंधों में १९वीं शताब्दी में उत्पन्न अनेक मनीषियों जैसे राजाराममोहनराय, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द, महर्षि अरविन्द घोष, लोकमान्य गंगाधर तिलक तथा गांधी ने राम, कृष्ण, हनुमान, सीता, सावित्री, माता कौशल्या, देवकी, मातुश्री का स्मरण कराया। इसके पश्चात् आने वाली पीढ़ी ने इस विषय पर विचार करना छोड़ दिया। इसे एक विडम्बना ही करेंगे कि हम इन पुरुषों को समय-समय पर याद करते हैं, परन्तु इनके आदर्श, उत्तम आचरण, शिक्षा, उपदेशों पर उचित मात्रा में ध्यान नहीं देते हैं। यह स्मरण हमारा अधूरा है और अपूर्ण है। यह आचरण शुभ नहीं है। यह हीनता की मनोवृत्ति बदलनी होगी।

हमारी भारतीय आर्य (हिन्दू) जाति का एक विशिष्ट गुण यह है कि एक बार ग्रहण किये ये रिवाज, पर्व, उत्सव और समारोह मनाये जाने में एक निरन्तरता बनी रहती है। इस निरन्तरता में समय चक्र के कारण अनेक आवरण आ जाने पर भी रूढ़ियों के रूप में यह पूर्ववत चलते रहते हैं और कालान्तर में उन पर्वों की मूल आत्मा के ऊपर धूलिमा चढ़ जाती है। जाति में नई जागृति और क्रांति लाने के लिए उन पर्वों का मूल तथा वास्तविक कथानक प्रचारित करने का यदि प्रयास किया जाता है तो नवीनता को ग्रहण करने में कोई रूचि नहीं ली जाती। इसी अन्ध-परम्परा का नाम पौराणिक मानसिकता है। इस सामाजिक सिद्धान्त का मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के कार्य-कलापों से गहरा और अटूट संबंध है। सत्य की तीव्रगति के कारण राम से संबंधित दो घटनाएं आंख मूंदकर जोड़ दी गई है।

(क) अश्विन शुक्ल १० को भगवान राम ने लंका-

thearyasamaj.org

नरेश रावण को मार कर विजय प्राप्त की थी, इस कारण इसी तिथि को विजयादशमी पर्व (दशहरा) मनाया जाता है।

(ख) कार्तिक अमावस्या को भगवान राम को अयोध्या में प्रत्यावर्तन (लौट आना) अथवा पुंनरागमन हुआ था। इसकी खुशी में अयोध्यावासियों ने घी के असंख्य दीपक जलाये थे। तभी से यह दीपावली पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

यह स्मरण रखने योग्य बात है कि भगवान राम का वास्तविक जीवन चरित्र का मूलाधार महर्षि वाल्मीकि रचित 'वाल्मीकि रामायण' है, जो कि उनके ही कार्यकाल में रची गई थी। इस घटना और ग्रंथ की रचना नौ लाख वर्ष पूर्व हुई थी। इसी सन्दर्भ में १५वीं शताब्दी में अकबर के राज्यकाल में हुए सगुणोपासक सन्त तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस' की रचना कर विदेशी मुगलों के अत्याचारों तथा अकबर की धूर्ततापूर्ण कार्यवाईयों से इस विशाल हिन्दू जाति (आर्यो) की अस्मिता की रक्षा की थी। यद्यपि विषय वस्तु की दृष्टि में ये दोनों ग्रन्थ अपने-अपने समय में अति महत्वपूर्ण जाने जाते रहे हैं, परन्तु अधिक प्रमाणिकता के धरातलपर वाल्मीकि रामायण ही मान्यतापूर्ण है। वाल्मीकि रामायण तत्कालीन सामाजिक वातारण में रची गई थी। इस कारण उपरोक्त वर्णित दोनों घटनाओं की सत्यता और मूल्यांकन वाल्मीकि रामायण के आधार पर ही होना चाहिए। सन्दर्भ और विषय- वस्तु के आधार पर हम यहाँ विजयादशमी पर्याय दशहरा उत्सव की प्रामाणिकता के विषय में अत्यन्त संक्षिप्त रुप में विचार करेंगे।

बाली वध के पश्चात् सुग्रीव से मैत्री - वर्षा ऋतु की समाप्ति के पश्चात् एक माह की अर्वाध भी समाप्त हो गई। सुग्रीव की ओर से सीताजी की खोज के संबंध में कुछ भी कार्य नहीं हुआ। सुग्रीव के प्रमाद वश यह उपेक्षा हुई। इससे राम और उनके सहयोगियों में चिंता होना स्वाभाविक था। उसे सचेत करते हुए राम ने सन्देश में कहा -

न स संकुचितः पन्था येन बाली परा गतः।
समये तिष्ठ सुग्रीवमा बालिपथ मन्वगाः॥ वा.रा.३०/११

<u>अर्थ</u> : सुग्रीव को सचेत करते हुए राम ने कहा - सुग्रीव! बाली मारा जाकर जिस रास्ते से गया है, वह आज भी बन्द नहीं हुआ है। इसीलिए तुम अपनी प्रतिज्ञा पर डटे रहो। बाली के मार्ग का तुम अनुसरण मत करो। कहते हैं, समझदार को ईशारा काफी होता है। यह सन्देश पाते ही वह सहम गया और भयभीत हो उठा। भगवान राम को यह मानसिक आवेश 'मन्यु' था। मन्यु और क्रोध में बड़ा अन्तर होता है। शास्त्रकारों के अनुसार क्रोध एक तामसी मनोवृत्ति है। क्रोध के आवेश में बुद्धि लुम्पित (गायब) हो जाती है। मनुष्य क्रोधाग्नि में लाकर अपनी ही हानि अधिक कर लेता है। क्रोधावेश में अज्ञान-अंधेरा छा जाता है। वहीं क्रोधी व्यक्ति स्वयं की ही मूल्यवान वस्तुओं को नष्ट कर देता है। उसके क्रोध से चाहे अन्य की हानि न हो, परन्तु वह स्वयं अपनी अपार हानि कर लेता है। क्रोध का ज्वर उतरने पर क्रोधी बहुत पछताता तथा पश्चाताप करता है।

मन्यु :- इसके आवेग के समय विवेक बना रहता है। किसी भी मूल को सुधारने में वह तत्पर रहता है। उसमें प्रारम्भ से लेकर अन्त तक तेजिस्वता बनी रहती है। यद्यपि यह भी एक मानसिक विकार है परन्तु सतोगुणी होने के कारण आप्तजन इसका उपयोग कर पाते हैं।

हाँ, तो श्रीराम ने 'मन्यु' के माध्यम से सुग्रीव को सचेत कर दिया कि यह समय वानर जाति के लोग रण-विजय के लिए सेना, हाथी, घोड़ा, अस्त्र-शस्त्र आदि की तैयारी करते हैं। एक तुम हो जो लम्पट और प्रमादी बनकर अपनी ही जाति की स्वस्थ परम्पराओं की उपेक्षा कर रहे हो। शरद ऋतु आने के बाद भी तुमने 'सीता' की खोज का कोई प्रयास नहीं किया। क्या आप स्वयं अपनी प्रतिज्ञा भंग नहीं कर रहे हो?

ज्ञायतां सौम्य वैदेही यदि जीवति न वा।

अर्थ - सौम्य सुग्रीव! पहिले यह पता लगाओ कि विदेह कुमारी सीता अभी जीवित है अथवा नहीं। इसके बाद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि यह रावण कौन है तथा उसका देश कहाँ? इन दोनों का सम्पूर्ण समाचार शीघ्राति शीघ्र देने का प्रबन्ध करें। इसके बाद ही मैं तुम्हारे साथ मिलकर आगे की कार्ययोजना बनाऊँगा।

इन सारी बातों को जानने के लिए माल्यवान पर्वत पर रहते हुए **स च देशो महाप्राज्ञ यस्मिन् वसति रावणः**

thearyasamaj.org

श्रीराम ने लक्ष्मण को भेजा। प्रत्युत्तर में सुग्रीव ने कहा - मैंने चारों दिशाओं वानर सैनिक भेजा है। उनकी समयावधि एक माह निश्चित कर दी है। कोई भी वानर ५ रातों से अधिक किसी स्थान पर नहीं ठहर सकता। आप निश्चित रहें। अभी आश्विन मास चल रहा है, अतः कार्त्तिक मास के पूर्व ही सौम्यपुरुष राम की सारी चिन्ताएं तथा प्रश्नों के उत्तरों से उनका समाधान कर दिया जायेगा।

वाल्मिकीय रामायण के इस कथानक से स्पष्ट सिद्ध हो रहा है कि आश्विन मास से कार्तिक मास की अवधि में सीता के अनुसंधान तथा देश-विशेष का निश्चय ही नहीं हो पाया था। यह कितने आश्चर्य की बात है कि इस कथानक को तोड़-मरोड़ कर कार्तिक की अमावस्या को ही भगवान श्रीराम का अयोध्या पुनरागमन तथा विजयोत्सव के उपलक्ष्य में दीप मालाओं द्वारा नगर की सजावट आदि कार्य सम्पन्न होना, किसी बुद्धिमान का निश्चय नहीं हो सकता।

अन्धेनैव नीयमानाः यथान्धाः।

हमारा देश भावना प्रधान होने के कारण भावुक है। श्रद्धा के आधार पर भावुकता की अतिरेक स्थिति में कुछ भी निर्णय लेना बुद्धि संगत नहीं होता। उत्तरप्रदेश में रामलीलाएं खेली जाती है। इनमें उपरोक्त प्रसंग को थोड़ा सा मोड़कर जबकि राम द्वारा दक्षिण की ओर प्रस्थान का प्रसंग था, किसी राम-लीला संयोजक ने बिना तर्क किये उसे अयोध्या की ओर पुनरागमन से जोड़ दिया और श्रद्धालु समाज भावना वश कार्तिक मास की अमावस्या को ही विजयोत्सव मानकर दीप मालाएं जलाने लगी।

दूसरे राम को १४ वर्ष का वनवास चैत्र मास से प्रारम्भ हुआ था तो उसका समापन भी चैत्र मास में ही होना संभव है। कार्त्तिक मास नहीं। अतः विजया दशमी पर्व आश्विन शुक्ल १० की अपेक्षा चैत्र मास में मनाया जाना चाहिए। इस बिन्दु पर गंभीरतापूर्वक विचार करना आवश्यक है।

टिप्पणी : देश के समस्त आर्यसमाजों को इस पर्व को चैत्रमास में हाईलाइट करके मनाना चाहिए, जिससे देश भर में इसकी सूचना जाए और जोर पकड़े।

पता : सुकिरण, अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.) ४५२००९

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति समारोह

दिनांक १२ अक्टूबर २०१४ : स्थान : ११९, गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली

मानव सेवा प्रतिष्ठान गत अनेक वर्षों से विभिन्न गुरुकुलों, विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थाओं के छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने तथा वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसारार्थ जीवनदानी, विद्वान्, विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन करने का कार्य में संलग्न है। उसी श्रृंखला में इस वर्ष भी यह **अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह** दिनांक १२-१०-२०१४ को गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली में प्रातः ८.०० बजे से १.०० बजे तक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

अतः आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर हमारा उत्साहवर्द्धन कर हमें अनुग्रहीत करेंगे।

-: निवेदक :-

सोमदेव शास्त्री (प्रधान) **रामपाल शास्त्री** (कार्यकर्ता प्रधान)

thearyasamaj.org

सन्देशात्मक

प्रकाश पर्व-दीपोत्सव

दीपावली विशेष

- आचार्य राजेन्द्र शर्मा

ज्योति-पर्व दीपावली का महान् सन्देश है, अपने जीवन-दीप के प्रकाश द्वारा समस्त मानवता को जगमगा देना और तभी अन्धकार में पनपने वाले विषमय तत्व-विनष्ट होंगे। इसके लिए ज्ञान, प्रकाश, आलोक, ज्योति को अपने जीवन दीप में लाना ही होगा। अन्धकार को विनष्ट करने में अन्यों के जीवन दीपों को प्रज्वलित करने में, पथ-भ्रष्टों के पथ-प्रदर्शन में, तिमिराच्छिन्न हृदयों को जगमगाने में यदि अपना दीपक बुझ भी जाए तो यहीं उसकी सार्थकता है।

मशालें वेद की लेकर अन्धेरा जो मिटा डाले।
उठे तो दिन निकल आये वही तो आर्य होता है॥

सत्ता और चेतना से समन्वित जीवात्मा आनन्द की खोज में सतत प्रयासरत रहता है। आनन्द उसका ध्येय है, आनन्द उसकी सीमा है जहां तक उसको दौड़ना है। जीवन-यात्रा का अन्तिम सोपान आनन्द है। परन्तु मानव भटक जाता है, पथभ्रष्ट हो जाता है, और उसकी अभीप्सा मात्र अभीप्सा ही रह जाती है। शाश्वत आनन्द की उपलब्धि के लिए उसका प्रयास सृष्टिं की उषा-काल से ही निरन्तर चल रहा है। पर्वो का समायोजन उसी आनन्द की प्राप्ति हेतु एक सशक्त प्रयास है। मानव-मस्तिष्क प्रपंचों और मायाजालों में फंसकर मृग-मरीचिका की अतृप्त तृष्णा के चक्कर में सदा व्याकुलता से छटपटाता रहता है। पर्व समय-समय पर आकर उसको आनन्द से भर देते हैं, हर्ष उल्लास से पूर्ण कर देते हैं, उमंग और उत्साह से सराबोर कर जाते हैं और यही पर्वों की सार्थकता है। दीपावली ऐसा ही महान पर्व है जिसको समृद्धि का पर्व कहा जाता है। आध्यात्मिक सम्पदा और भौतिक सम्पदा से हमारा अपना जीवन तथा समस्त राष्ट्रीय जीवन सम्पन्न बने तथा यह समृद्धि समस्त विश्व को अभाव मुक्त करने में समर्थ हो जिससे प्रत्येक मानव आशा और विश्वास से भरकर खिलखिला सके, यह है सार्वभौम उद्देश्य इस महान् गरिमामय पर्व का जिसको ज्योति पर्व के रूप में पुकारा जाता है।

ज्योति-पर्व नामकरण ही इस महान् उद्देश्य की सफलता के केन्द्र-बिन्दु को समाहित किए हुए हैं। इस रहस्य को हम इस तरह से समझ सकते हैं कि अन्धकार-अविद्या समस्त क्लेशों का क्षेत्र है। महर्षि पतंजलि की यह घोषणा शाश्वत सत्य है। इसलिए यह पर्व अन्धकार-अज्ञान के विनाश का प्रतीक है और हम सब को संकल्प लेना है कि कहीं पर भी अन्धकार नहीं रहने देंगे। छोटे-छोटे दीपकों को प्रज्ज्वलित कर हम इसी भावना को अभिव्यक्त करते हैं और सर्वशक्तिमान परम प्रभु से सहयोग मांगते है कि **तमसो मा ज्योतिर्गमय**। क्योंकि हम जानते हैं कि अन्धकार, तम, अज्ञान ही वास्तव में मृत्यु है और प्रकाश, ज्योति, ज्ञान ही अमृत है। प्रकाश प्रसन्नता और आह्लाद देता है तथा अन्धकार भय और शंका उत्पन्न करता है।

छोटा-सा लघु मिट्टी का दीप आज तिरस्कृत कर दिया गया है। विद्युत प्रकाश की चकाचौंध से हमने मिट्टी के दीप नई रूई, सरसों के तेल और उसकी शान्तिदायिनी, प्रदूषण विनाशिनी, दृष्टिवर्धिका शक्तिं को ही नहीं विस्तृत कर दिया अपितु अपने जीवन के लक्ष्य से ही वंचित हो गए। मिट्टी का यह लघु दीप प्रतीक है अपने इस मिट्टी के शरीरको जिसको दीपक बना कर हमको स्वयं को प्रकाशित करना है और प्रज्ज्वलित स्व जीवन-दीप से जन-जन दीपों को प्रदीप्त करना है। स्वदीप में न्यूनता नहीं आनी है और अन्धकारित अन्य जीवन-दीप मेरे स्वल्प प्रकाश से ही जगमगा उठते हैं। तब ही महाकवि की यह भावना चरितार्थ होती है कि **जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना। अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।** ज्योति-पर्व दीपावली का महान् सन्देश है, अपने जीवन-दीप के प्रकाश द्वारा समस्त मानवता को जगमगा देना और तभी अन्धकार में पनपने वाले विषमय तत्व-विनष्ट होंगे।

thearyasamaj.org

इसके लिए ज्ञान, प्रकाश, आलोक, ज्योति को अपने जीवन दीप में लाना ही होगा। अन्धकार को विनष्ट करने में अन्यों के जीवन दीपों को प्रज्ज्वलित करने में, पथ-भ्रष्टों के पथ-प्रदर्शन में, तिमिराच्छिन्न हृदयों को जगमगाने में यदि अपना दीपक बुझ भी जाए तो यही उसकी सार्थकता है। सूर्य के जाने के पश्चात् जैसे दीपक कह उठता है कि तुम भुवन भास्कर चले गए परन्तु तुमसे प्रेरणा प्राप्त कर मैं तुम्हारे आगमन तक अन्धेरे से युद्ध करता रहूंगा यह है पावन संकल्प जो आज जन-जन को लेना है। भुवन-भास्कर महर्षि दयानन्द के कैवल्यधाम में समाहित होने के पश्चात् आर्यजनों पर यह उत्तरदायित्व आता है कि ज्ञान के मार्ग समाप्त न होने पाएं, प्रकाश के स्तम्भ टूटने न पाए और सत्य अर्थ का प्रकाश होता रहे जिससे मानवता भटकने न पाए तथा सत्य का राजमार्ग सदा प्रशस्त रहे।

परन्तु आर्यों ! सतर्क और सावधान रहो कि कहीं यह ज्योति पर्व अन्धकार पर्व न बन जाए। अपने आप को और अपने घर को आलोकित करने का तात्पर्य यह नहीं है कि अपना अन्धकार तुम पड़ोसी के घर में ढकेल दो और उसके जीवन को और उसके घर को अन्धकार ग्रस्त कर दो। स्मरण रखो पड़ोस का अन्धकार आपके आलोक को ही तहस-नहस कर देगा और समस्त आर्यत्व पिशाचत्व में परिवर्तित हो जाएगा। अन्धकार में हम अपने आपको ही देखते हैं, अन्य किसी की भी अनुभूति हमको नहीं होती है। अतः अन्धकार विनाश हमारा कर्त्तव्य बन जाता है। वेद का उद्बोधन हमें सदा स्मरण रखना है - '**आर्यः ज्योतिरग्रा।**' और '**उरु ज्योतिः चकथुः आर्यम्।**'

पता - डी-१०, आर्यसमाज, शकरपुर

एतद् त्रयं प्रसरति

वार्त्ता च कौतुकवती विमला च विद्या, लोकोत्तरं परिमलश्च कुरङ्गनाभेः।
तैलस्य बिन्दुरिव वारिणि दुर्निवार-मेतद् त्रयं प्रसरति स्वयमेव भूमौ ॥

भावार्थ - दुनियाँ बड़ी अजीब है। जन-समाज के सामने कोई भी बात बिना पहुंचे नहीं रहती। चाहे अच्छी हो या बुरी? पहुंच अवश्य जाती है। महाकवि माघ ने कितने सुन्दर शब्दों में इसका चित्र खींचा है - कोई भी कौतुकमयी चर्चा हो (जैसे किसी के घर में एक साथ दो बच्चे जन्में हों, किसी व्यापारी का दिवाला निकल गया हो) चाहे वह लाख छिपाने का प्रयत्न आप कीजिए छिप नहीं सकती। इसी तरह विद्या का है कि - यदि मनुष्य के पास सच में ही श्रेष्ठ विद्या है, ज्ञान है, कोई चाहे या न चाहे अथवा लाख बार उसके ज्ञान पर पर्दा डालने चाहे परन्तु वह तो फैलेगा ही। विद्या तो सूर्य के प्रकाश की तरह है क्या संसार का कोई भी अन्धकार प्रचण्ड रवि की रश्मियों को छू सकता है ? कदापि नहीं। यही दशा कस्तूरी की है। कस्तूरी की अद्वितीय लोकोत्तर सौरभ, सुगन्ध क्या कभी रुक सकती है ? वह तो फैलेगी ही। आप चाहें कहीं उसे क्यों न रख दें ? वह तो अपना गुण बिना किसी के कहे ही बताएगी। किसी को यह कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी कि यह कस्तूरी है। कवि माघ कहते हैं कि - जिस प्रकार जल में तैल की बूंद स्वयमेव फैलती है, उसे रोकने का सामर्थ्य किसी में नहीं है, तथैव उपर्युक्त तीनों वस्तुएँ स्वतः ही फैलती हैं। इनके विज्ञापन अथवा प्रचार की किसी को आवश्यकता नहीं है।

- सुभाषित सौरभ

thearyasamaj.org

जीवन के साथ मृत्यु भी बन कई प्रेरणा

–आचार्य भद्रसेन

दीपावली पर्व पर विशेष

भारतीय परम्परा में अधिकतर महापुरुषों के जन्म दिन मनाये जाते हैं। परन्तु जिन महापुरुषों की मृत्यु किसी विशेष घटना के रूप में घटित हुई है, उनके शहीदी दिवस भी समारोह पूर्वक सम्पन्न होते हैं। महर्षि दयानन्द की मृत्यु स्वाभाविक नहीं थी, वह अपने पीछे एक विशेष पृष्ठभूमि रखती है। जैसे कि यह बात पूर्णतः स्पष्ट है कि अन्तिम दिनों में महर्षि के सारे शरीर पर फफोले पड़ गये थे और उन्हें बहुत बड़ी संख्या में दस्त भी आये थे। डाक्टर के इलाज से रोग उलटा बढ़ा था। उन दिनों की सारी घटनाएँ महर्षि की मृत्यु को एक योजनाबद्ध षड़यंत्र सिद्ध करती है। जब महर्षि को जोधपुर से लाया जा रहा था, तो मार्ग में एक डाक्टर (लक्ष्मण) अकस्मात् मिला, पता लगने पर उसने इलाज किया, जिससे कुछ लाभ हुआ। उसने महर्षि के पास रहकर उपचार करना चाहा, पर न तो उसका अवकाश स्वीकार किया गया और न ही त्यागपत्र।

महर्षि ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों जिस प्रकार रियासतों के राजाओं को प्रभावित करना प्रारम्भ किया था और भारतीय जनता पर महर्षि के प्रचार का जिस प्रकार से अमिट प्रभाव पड़ रहा था, इसी के परिणामस्वरूप नवजागृति के साथ भारतीयों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास प्रारम्भ हो गया था। वह तात्कालिक विदेशी सरकार को नहीं सुहाया। तब महर्षि के विरुद्ध एक षड़यंत्र रचा गया, जो कि उनके निधन का कारण बना। अतः महर्षि की मृत्यु की घटना शहीदी पर्व की तरह अविस्मरणीय है। इसीलिए अत्यधिक समारोह के साथ प्रथम निर्वाण शताब्दी का आयोजन होना चाहिए।

महर्षि के मृत्युकाल का वह घटना-चक्र अपने आप में एक अनूठा प्रसंग है। क्योंकि उसको देखने वाले साधारणजन ही नहीं अपितु बड़े-बड़े डाक्टर भी दंग थे। इतना अधिक शारीरिक कष्ट होने पर भी महर्षि ने बड़ी शान्ति और धैर्य के साथ इसे सहा तथा सहर्ष स्वयं मरण को स्वीकार किया। जिसको देख मनीषी गुरुदत्त एम.ए. नास्तिक से आस्तिक बनकर महर्षि के लक्ष्य को पूर्ण करने में अनवरत तत्पर हो गये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन, विचार एवं कार्य भी अपने आप में एक अनुपम उदाहरण है। उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि ने एक वैचारिक क्रान्ति की। महर्षि के विचार व्यावहारिक, प्रगतिशील, जीवन्त, तर्कसंगत ही नहीं अपितु भारतीय शास्त्रों से प्रमाणित भी थे। अर्थात् जो भारतीय साहित्य और संस्कृति सहस्रों वर्षों से विद्यमान थी, परन्तु कुछ ने उसके समग्र स्वरुप को सामने न रखकर उसका एकांगीपन ही प्रचलित कर दिया। जिसके परिणामस्वरुप एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी-देवताओं का पूजन, जन्मना ऊँचा-नीचापन, सामाजिक, छूआछूत, स्त्री शिक्षा का विरोध और अनमेल विवाह आदि मान्यताएँ भारतीयों में

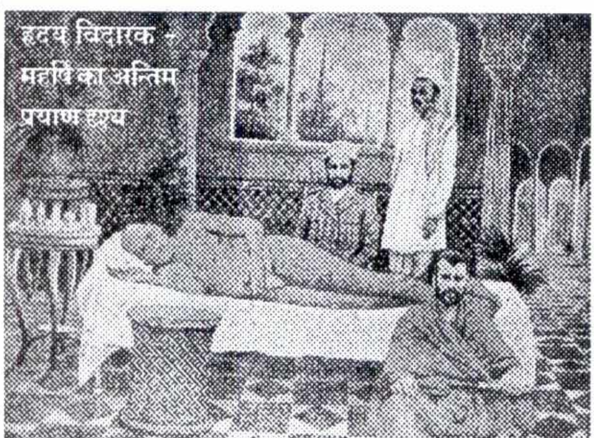
हृदय विदारक - महर्षि का अन्तिम प्रयाण दृश्य

thearyasamaj.org

प्रचलित हो गयी। महर्षि दयानन्द ने भारतीय शास्त्रों के प्रमाणों से ही उपर्युक्त रूढ़ियों का निराकरण करके जीवन का एक तर्कसंगत, जीवन्त, व्यावहारिक रूप उपस्थित किया। इस सम्बन्ध में अधिक लिखने की अपेक्षा हिन्दी भाषा जानने वालों के लिए महर्षि के अपने वाक्य अपने आप में स्वयं परम प्रमाण है। इन वाक्यों की विद्यमानता में यही कहना अधिक संगत है, कि हाथ कंगन को आरसी क्या और महर्षि के इन वाक्यों की उपस्थिति में उस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहना सूरज को दीपक दिखाना या मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त वाली ही बात होगी। जीवन के विभिन्न व्यवहारों के सम्बन्ध में मार्ग दर्शन करने वाले थे।

महर्षि के मन में स्वतन्त्रता प्राप्ति की तड़प उदीप्त हो चुकी थी, अतः विद्याध्ययन के कार्यक्रम को निरस्त करके नर्मदा तट संगठन के कार्य में तल्लीन हो गये। और स्वामी दयानन्द सम्वत् १९१७ में स्वामी विरजानन्द के पास मथुरा पहुंचे तथा तीन वर्ष तक विद्याध्ययन करके गुरुदक्षिणा में जीवनदानी बनकर चल पड़े। पहले शैव मतावलम्बी बन वैष्णव मत का खण्डन करते रहे तथा इसके पश्चात् शैवमत का भी खण्डन आरम्भ कर दिया। यह परिवर्तन उनके निरन्तर चिन्तन एवं स्वाध्याय का परिणाम था।

जब दुनियां रो पड़ी

एकदम लम्बा सांस लिया, फिर उसे वेग से छोड़ दिया।
इस नश्वर शरीर से तभी, आत्मा ने सम्बन्ध तोड़ लिया।।
सायंकाल छः बजे दीवाली की करोड़ों दिये जले।
तीन अक्टूबर अट्ठारह सौ तिरासी को ऋषि परलोक चले।।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जग में सुखों के दाता थे।
बहुत बड़ा स्वाध्याय था उनका सब वेदों के ज्ञाता थे।।
महिलाओं और दलित जनों का बहुत बड़ा उद्धार किया।
आर्यसमाज के द्वारा उन्होंने दुनियां का उपकार किया।।

पाखण्डों से ऋषि दयानन्द ने जो अविराम युद्ध किया।
सही मार्ग दिखला करके भूले भटकों को शुद्ध किया।।
ब्रह्मचारी विद्वान थे और वह सत्यधर्म प्रचारक थे।
जात पात नहीं मानते थे निराकार के उपासक थे।।

उनके जीवन दर्शन से यह मेरी समझ में आया है।
स्वामी जी ने निश्चित ही मोक्षधाम पद पाया है।।
अपने सतत प्रयत्नों से प्राणी मात्र का कल्याण किया।
बड़ी अभागी रात थी वह उन्होंने जब प्रस्थान किया।।

महाकाव्य - दयानन्द गौरवगाथा (लेखक : अभयराम शर्मा 'दयानन्दी')

दयानन्द यदि चाहते तो समाज से दूरस्थ जंगलों में जाकर घोर तपस्या से मुक्ति को प्राप्त कर लेते, किन्तु देश और समाज की मुक्ति के समक्ष आत्म-मुक्ति की बात उनके लिये बहुत ही छोटी पड़ गयी थी। यही कारण था कि उनका स्वतन्त्र चिन्तन राष्ट्रीय मानस में नवीन प्राण फूंकने का मार्ग खोज रहा था। अपने मार्गानुसन्धान के कार्यकाल में वे यदा-कदा गुरुवर विरजानन्द जी से अवश्य मिल लेते थे। वे निरन्तर जनकल्याण के कार्य में लगे रहे। देशाटन करते हुए वे अपने क्रान्तिकारी विचारों से देश की जनता को अवगत कराते रहे। अन्ततः सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना स्वामी जी ने की और **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** का सूत्र प्रचारित किया। उनके मन में आजादी की तड़प इतनी थी कि उनके ग्रन्थों में स्थान स्थान में उसका उद्घाटन होता है। आज भले ही वे हमारे बीच नहीं है किन्तु उनके स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचार उनके ग्रन्थों के माध्यम से हमें परस्पर प्रेम तथा स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिए प्रेरित करते रहें। कार्तिक की अमावस्या को महर्षि का महाप्रयाण हुआ और जाते जाते असंख्य वैदिक धर्मियों का दीप प्रज्वलित कर गये। आओ, ऋषि का दीप बनकर उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय कर प्रकाश फैलाएं।

thearyasamaj.org

पुण्य स्मरण अविभाजित मध्यप्रदेश के निर्विवाद आर्यनेता -

स्व. रमेशचन्द्र श्रीवास्तव

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

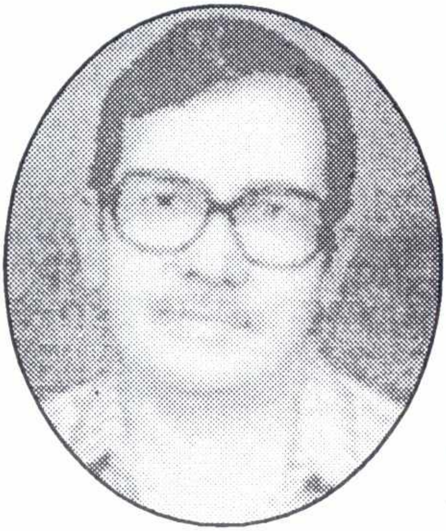

स्व. श्रीवास्तव जी से प्रायः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशनों में भेंट होती थी। वे अविभाजित मध्यप्रदेश की सभा के मंत्री थे और उस समय इस सभा में विदर्भ और नागपुर का क्षेत्र भी था।

मध्यकाल में देशी रियासतें थी। उन दिनों रमेश जी में नया उत्साह, नई उमंग, नवीन प्रेरणाएं हिलोरे लेती थीं। इस स्नेह मिलन का कोई न कोई शुभ परिणाम निकलना ही था और यह हमारे स्नेह सम्बन्ध के रुप में प्रस्फुटित हुआ। उनकी सुपठित, सुप्रशिक्षित, रुप गुण सम्पन्न कन्या मेरे घर में पुत्रवधु बनकर मंगलों की पर्दा करती आई।

विगत वर्ष में आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ के मंत्री तथा बाद में प्रधान के पद को आपने जिस योग्यता तथा कौशल से निभाया, वह निश्चय ही प्रेरणास्पद था। आपने प्रान्तीय सभा की परिसम्पत्तियों का संरक्षण ही नहीं किया, उसे बढ़ाया। इसके कारण वर्तमान छत्तीसगढ़ स्थित प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अनेक शिक्षण संस्थाएं चलती रही, उनका योग्यतापूर्वक संचालन श्रीवास्तव जी निष्ठापूर्वक करते रहे हैं। मुझे उनके इस कार्यकाल में दुर्ग, भिलाई, बिलासपुर तथा रायपुर आदि नगरों में प्रचारार्थ जाने का अवसर मिला और मैंने देखा कि उनकी कार्यक्षमता तथा सेवाभाव का दर्शन सर्वत्र हो रहा है। उनके कार्यकाल की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है दुर्ग में दयानन्द परिसर तथा आर्यनगर व्यावसायिक केन्द्रों का निर्माण और विकास। पारिवारिक यज्ञों और सत्संगों को सफल बनाने में उनका योगदान कितना महत्वपूर्ण रहा है यह हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। विगत कुछ समय वे अनेक कठिन रोगों के दुष्चक्रों में घिरे रहे जो अन्ततः घातक सिद्ध हुआ। मेरा उनका सम्बन्ध तो बहुआयामी रहा। उसमें जहां सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रम आते थे, साथ ही पारिवारिक सम्बन्धों की मधुरता भी थी। वे मुझसे आयु में छोटे थे। उनका वियोग परिवार के अतिरिक्त एक सामाजिक क्षति भी है। परमात्मा उन्हें चिर शान्ति प्रदान करें।

पता : ३/५ शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

thearyasamaj.org

आरोग्य होम्योपैथी चिकित्सा विज्ञान और मानव जीवन शैली

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

पूरे संसार में अनेकों चिकित्सा पद्धतियाँ प्रचलित है, परन्तु होम्योपैथी की अपनी अलग पहचान है। सभी पद्धतियों की दवाइयों के परीक्षणों का आधार चूहे, बंदर, मेढक जैसे अनेक रोगी जानवर होते हैं। लेकिन 'होम्योपैथी की औषधियाँ का सफल परीक्षण स्वस्थ मानव शरीर पर होता है।

यह पूर्ण सत्य है कि जटिल रोगों में होम्योपैथी औषधियों का असर धीरे-धीरे होता है, लेकिन रोगी को पूर्ण रुपेण रोग को जड़ से नष्ट करने की अचूक चिंकित्सा पद्धति है। नये रोगों में तुरन्त फायदा मिलता है।

प्रकृति और मानव जीवन - वेदों में सूर्य को विश्व का प्राण कहा गया है। इसकी प्रखर किरणों के आगे धरती तपती है, लू की लपटें चलती है, पसीना छूटने लगता है। प्यास के मारे संसार छटपटाने लगता है। क्या यह अंतरिक्ष का प्रभाव मानव शरीर पर नहीं पड़ता? क्या कारण है कि कुछ मनुष्य इन प्रहारों के शिकार हो जाते हैं। और कुछ नहीं। सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती हुई धरती की धुरी को थोड़ा सा झुकाव देते ही इसके भिन्न-भिन्न भू-भागों की कायापलट हो जाती है। वर्षा के आगमन की सूचना नगाड़े बजाता हुआ आषाढ़ आता है, कुछ मनुष्यों को जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द कराहना आदि रोग बढ़ जाते हैं, हिमालय पर जब हिमपात होता है तो बर्फ की ठंडी हवायें चलने लगती है। कई लोग इसे सहन नहीं कर पाते नाक बहने लगती है, छींकने लगते हैं, वायुमण्डल में जलतत्त्व की कमी और वृद्धि अलग-अलग शरीरों पर अलग-अलग प्रभाव क्यों ?

क्या कारण है कि कुछ लोगों के लिए एक सुखद स्थिति होती है तो दूसरे के लिए अत्यन्त दुखद हो जाती है। होम्योपैथी रोग निदान और उसकी सही तस्वीर खींचने के लिए इन प्रभावों को सर्वप्रथम स्थान देती है। मनुष्य केवल भौतिक शरीर नहीं एक सचेतन प्राणी है, वह भी एक अखिल ब्रह्माण्ड का एक अंग है, अतः देशकाल की परिधियों से वह कैसे अछूता रह सकता है ? भौगोलिक परिस्थितियां भी उसके जीवन को प्रभावित करती है।

मानव जीवन पर संस्कृति का प्रभाव - अंतरिक्ष का प्रभाव सूर्य, चंद्र के किरणों का प्रभाव ऋतुओं का प्रभाव, सामाजिक प्रभाव, ठंड और गर्मी का प्रभाव भिन्न-भिन्न परिस्तिथियों से व्यक्तिगत मनोभावों पर पड़ने वाला प्रभाव।

इन सब प्रभावों की मनुष्य के मन पर निरन्तर प्रतिक्रिया होती रहती है, यही हमारा जीवन है। अतः होम्योपैथी वर्तमान का और भविष्य में आने वाले चिकित्सा विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है।

प्रकृति के अनुसार दी जाने वाली औषधियाँ -

मटेरिया मेडिकाएं इन परीक्षित औषधि द्रव्यों के गुण धर्मों से भरी पड़ी है।

१. बरसात में सीलन भरी ठंडी हवाओं से रोग होने पर दी जाने वाली औषधियाँ - रसटाक्स रोडेक्ड्रोन, डल्कामारा, नेट्रमसल्फ, एमोनियमकार्व, फाइटोलिका।
२. ठंडी के मौसम में कड़कड़ाती सर्दी से रोग होने पर औषधियां-एकोनाईट, कास्टिकम, नक्सवोमिका आदि।
३. बसंत ऋतु में रोग होने पर दी जाने वाली औषधियां - अरेलिया, रेसीमोसा, ब्रायोनिया, पल्साटिला, इपिकाक।
४. गर्मी के मौसम में तपते सूरज की गर्मी और लू की लपटों से बचाव के लिए औषधियाँ - एकोनाइट, ग्लोनाईन, नेट्रमकार्ब आदि।
५. चांदनी रात में नाचने गाने वाले व कविताएं रचने वालों केलिए औषधि - एंटिमक्रूड उपयोगी है।
६. नव वधू के लिए औषधि - स्टैफीसेग्रिया। घर के कलह से परेशान सास बहू के लिए - नेट्रमम्योर।

thearyasamaj.org

७. जिन व्यक्तियों का स्थानांतरण हो जाता है और नयी जगह जाते हैं अपने आपको व्यवस्थित करने में मानसिक पीड़ा झेलनी पड़ती है इसके लिए - वालनट औषधि उपयोगी है।

सपनो का प्रभाव -

हम अपने जीवन का एक तिहाई भाग सपनों और नींद में व्यतीत करते हैं। अतः जीवन के इस महत्वपूर्ण भाग की उपेक्षा कैसे की जा सकती है ? तीन अवस्थाएँ होती है- जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था। होम्योपैथी ही है जो इन अवस्थाओं को अपने चिकित्सा विज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान देती है। सांपों के सपने पर - लैककेनियम औषधि। हवा में उड़ने वाले सपने आने पर - एपिस औषधि।

होमियो औषधियाँ -

समुद्र की अतल गहराई से बनी औषधि नेट्रमम्योर - सीपिया से लेकर अंतरिक्ष में उड़ान भरने की क्षमता, चंद्र किरणों से बनी औषधि - लूना-एक्सरे, रेडियम। इस प्रकार होमियो औषधियों के विपुल भंडार जल-थल और नभ में फैले हुए हैं, ये अटूट है। यही कारण है कि होमियो औषधि रोग को समूल नष्ट करती है।

जटिल रोग -

जैसे पथरी, गर्भ नहीं ठहरना, पोलिया, भगन्दर, पीलिया, मलेरिया, लकवा, गनेरिया, कमर दर्द, स्लिपडिस्क, साइनस, दमा, हिस्टीरिया, मधुमेह, रक्तचाप, कैंसर, मुंह, गला, स्तनों में, पेट में , आंतों में, मलद्वार में, यूट्स आदि में। होमियो औषधियाँ अधिक प्रभावी सिद्ध हुई है। जटिल से जटिल रोगों को होमियोपैथी औषधि ठीक करने की क्षमता रखती है।

तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।

पता - त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबंध रायपुर (छ.ग.)

"वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन"

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द जिले के **आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी परिसर** में प्रान्तीय स्तर का वृहद् **वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन** का आयोजन **दि. ५, ६, ७ दिसम्बर २०१४** को आयोजित किया जा रहा है। जिसमें भारत वर्ष के कोने-कोने से सौ से अधिक वैदिक विद्वानों का आगमन हो रहा है। सम्मेलन में वेद के सूक्ष्मतम् विषयों पर चिन्तन, चर्चा व संगोष्ठी होगी साथ ही सस्वर वैदिक पाठों से वातावरण सुवासित होगा। भारतवर्ष के उच्चकोटि के साधु-संन्यासी, विद्वान्, आचार्य सहित समाजसेवी महानुभाव व महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं मंत्रीगण के पधारने की सम्भावना है।

अतः अभी से आप सभी को आयोजन का पावन निमन्त्रण भेज रहे हैं। आयोजन की भव्यता व महत्ता को सार्वजनिन करते हुए अनुरोध है कि इन तिथियों में किसी प्रकार का आयोजन अपने यहां न रखें। सम्मेलन में पधारकर अनुगृहीत करें।

भवदीय : कोमल कुमार आर्य, 'आचार्य' आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम, कोसरंगी, पो. पचेड़ा, जिला-महासमुन्द (मो. ९६१७०८२०००)

thearyasamaj.org

डी.ए.व्ही. नन्दिनी में हुआ नैतिक शिक्षा सत्र

नन्दिनी (भिलाई)। दिनांक २-९-१४ को प्रातः ८ से ११ बजे तक डी.ए.व्ही. नन्दिनी के विशाल सभागार हंसराज भवन में एक दिवसीय नैतिक शिक्षा सत्र का आयोजन किया गया। कक्षा ५वीं से लेकर १२वीं तक के बच्चों के लिए विशेष रुप से आयोजित इस प्रशिक्षण को सम्बोदित करने के लिए सुदूर महाराष्ट्र से पूज्य स्वामी सांख्यायन सरस्वती जी पधारे थे। प्राचार्य श्री राजशेखर पालीवाल जी ने कार्यक्रम के पूर्व स्वागत भाषण देते हुए इस बात पर जोर डाला कि आज की पीढ़ी को सबसे अधिक नैतिकता की जरुरत है क्योंकि सुबह से लेकर शाम तक मिडिया के द्वारा जो परोसा जा रहा है वह समाज के विकास में स्वस्थ उत्तरदायित्व का निर्वाह नहीं कहा जा सकता। अभी दो दिन पहले किसी अखबार के मुख्य समाचार में आतंकी शिक्षक शब्द का प्रयोग किये जाने पर सख्त एतराज जताते हुए कहा कि शिक्षक किसी भी राष्ट्र का भाग्यविधाता एवं भविष्य निर्माता होता है। उसके चयन को स्वामी को सार्वजनिक दोष के रुप में चित्रण नहीं किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम के विशिष्ट प्रशिक्षक पूज्य स्वामी जी ने अपने विशेष वक्तव्य में छात्र-छात्राओं को बतलाया कि छात्र जीवन में सफलता तभी मिलेगी जब व्यवस्थित दिनचर्या होगी, रात १० बजे के बाज जागना नहीं चाहिए, यदि ऐसा करेंगे तो आपकी सेहत ठीक नहीं रहेगी। शरीर स्वन्थ रहेगा तो मन स्वस्थ रहेगा तथा मन के स्वस्थ रहने से प्रत्येक कार्य में सफलता अवश्यम्भावी हो जाती है। सफल होने के लिए कुछ और भी गुण होते हैं। सामर्थ्य, योग्यता, पात्रता, विवेक ज्ञान, धैर्य, परिश्रम, साहस, बुद्धि तथा उत्साह के द्वारा आप हर क्षेत्र में सफल हो सकते हैं।

स्वामी जी ने अपने विस्तृत प्रशिक्षण के दौरान पांच प्रकार के कर्मों पर प्रकाश डाला - **निहित कर्म** :- वे होते हैं सोना, जागना, खाना, पीना इत्यादि। सकाम कर्म :- अपने हित के लिए किए जाने वाले कार्य। निष्काम कर्म :- परोपकार के सारे काम, मिश्रकर्म, किसान द्वारा कृषि कार्य जिसका उद्देश्य अनाज पैदा कर समाज की भूख मिटाना है, किन्तु इस उद्देश्य को पाने के लिए कितने ही कीड़े, मकोड़े अनचाहे मारे जाते हैं इस तरह ये मिश्र कर्म है। हमें अपने जीवन को पूर्ण बनाने के लिए निरन्तर सत्कर्म करने की आवश्यकता है। अन्त में शान्तिपाठ के साथ सत्रसमापन की घोषणा की गई।

संवाददाता : प्राचार्य, डी.ए.व्ही, नन्दिनी भिलाई

बसन्त साड़ी परिवार बिलासपुर में वेदप्रचार महोत्सव सम्पन्न

बिलासपुर। आर्यसमाज गोंड़पारा बिलसापुर के उपप्रधान श्री सुधीर कुमार आर्य के निवास वसन्त साड़ी सेन्टर सदर बाजार बिलासपुर में दि. १ से ३ अगस्त २०१४ तक श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में वैदिक धर्म प्रचार हेतु वैदिक ज्ञान गंगा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वेद ज्ञान की निर्मल और पवित्र धारा प्रवाहित करने हेतु हरिद्वार से आचार्य अखिलेश्वर जी तथा सुमधुर भजनोपदेश से दिव्य आनन्द की वर्षा करने पं. कंचन कुमार जी दिल्ली से अपनी मंडली सहित पधारे। वैदिक यज्ञ का कुशल संचालन आर्यसमाज़ बिलासपुर के पुरोहित पं. जयदेव शास्त्री जी द्वारा तथा मंच संचालन रायपुर से पधारे वैदिक विद्वान आचार्य प्रेम प्रकाश शास्त्री जी द्वारा किया गया।

सावन की झमाझम बारिश के मध्य बिलासपुर की आर्य जनता के अलावा बड़ी संख्या में इष्ट मित्रों एवं रिश्तेदारों ने भाग लिया। इन्दौर से पधारे श्री दिनेश गुप्ता जी की सपरिवार उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ा दिया। कार्यक्रम में सहयोगी एवं उपसिथत सभी जनों के प्रति गुप्ता परिवार की ओर से श्री सौमित्र गुप्ता जी द्वारा आभार प्रदर्शित किया गया। वैदिक ज्ञान की पावन गंगा प्रवाहित करने हेतु आर्यसमाज बिलासपुर की ओर से धन्यवाद व शुभकामना संदेश का स्व रचित काव्य पाठ श्री पुष्कर जायसवाल जी ने प्रस्तुत किया।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल, मंत्री आर्यसमाज बिलासपुर

thearyasamaj.org

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

रोजड़ (गुजरात) । पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़ गुजरात में दिनांक १६ नवम्बर से २३ नवम्बर तक ८ दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरार्थी १६ नवम्बर को सायंकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जायें। शिविर समापन २३ नवम्बर २०१४ को होगा । सपंर्क : व्यवस्थापक - वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पत्रा-सागपुर, जि.-साबरकांठा (गुजरात) दूरभाष : ०२७७०-२८७४१७, २९१५५५, ९४२७०५९५५०

प्राचार्य/शिक्षकों की आवश्यकता

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर (पंजाब) में संस्कृत व्याकरण, वेद एवं दर्शन के अध्यापन हेतु आवासीय शिक्षकों के लिए प्रस्ताव आमंत्रित है । ऐसे व्यक्ति जो विद्यार्थियों के लिए जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर प्रेरणा दे सकें तथा ब्रह्मचारियों के व्यक्तित्व निर्माण में रुचि रखते हों को अधिमान दिया जायेगा । प्रार्थी अपने शैक्षणिक विवरण के साथ अपना मोबाईल नंबर भी लिखकर भेजें । मानदेय योग्यता अनुरुप तथा आवास एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क रहेगी ।

संपर्क : प्रधान, ध्रुव कुमार मित्तल, ९८८८७६४३१११

मंगलकामना

ज्योति पर्व दीपावली

भारतीय नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती के महानिर्वाण का अवसर है । यह ऋषि निर्वाण दिवस हम आर्यों के जीवन में

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

को साकार करने की शक्ति के साथ नई स्फूर्ति व अभिनव प्रेरणादायक सिद्ध हो ।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय सभा की ओर से

हार्दिक शुभकामनायें

प्रधान/मंत्री/कोषाध्यक्ष

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

- **दीनानाथ वर्मा, मंत्री** मो. ९८२६३६३५७८, **श्रीनारायण कौशिक** : ९७७०३६८६१३

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

thearyasamaj.org

दयानन्द यशोगान

हे दयानन्द हे कृपामूर्ति हे विश्ववन्द्य हे गुणागार,
तेरी सेवा को कर के याद चरणों में शीश झुकाते हैं।

(1)

निर्जन भीषण कान्तारों में जाकर तुमने शिव को खोजा
नित ओम नाम का सिमरन कर विषयों में ना जीवन खोया
तुमने सच्ची शिक्षा देकर जन-जन का अति कल्याण किया
मूर्ति पूजा बाह्याडम्बर जादू टोना से सचेत किया
बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे तुम तुमको हम शीश झुकाते हैं।

(2)

'आर्य समाज' की स्थापना कर तुमने हम पर उपकार किया
कन्या गुरुकुल खुलवा करके नारी कुल का उद्धार किया
'संस्कार विधि' लिख कर तुमने शु-संस्कारों का ज्ञान दिया
'सत्यार्थ प्रकाश' प्रकाशित कर सबको सन्मार्ग प्रदान किया
तेरी विद्वता के सन्मुख शत्रु भी शीश झुकाते हैं

(3)

मन वचन कर्म से एक रुप जो कहते थे वह करते थे
केवल कौपीन धारण करके अतिशीत में नंगे रहते थे
तुम इन्द्रिय जीत होकर वन में निर्भय हो विचरण करते थे
परमेश्वर है रक्षक मेरा नहीं दुष्ट जनों से डरते थे
हे निर्भय बाल ब्रह्मचारी तुमको हम शीश झुकाते हैं

(4)

तुमने अपनी विद्वता से आश्चर्य चकित सबको ही किया
शास्त्रार्थों में निज तर्कों से विद्वानों का मुंह बन्द किया
तुम थे संस्कृत के उन्नायक संस्कृत भाषा का मान किया
'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' लिखकर फिर वेदों का उद्धार किया
हे वेद ज्ञान के विस्तारक चरणों में शीश झुकाते हैं।

(5)

आर्ष परम्परा कोलेकर तुमने वेदों का भाष्य किया
वेदों का ज्ञान विज्ञान युक्त निज भाष्यों से यह सिद्ध किया
सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद उच्चस्वर से उद्घोष किया
वेदों के अर्थ प्रकाशित कर सारे जग का उपकार किया
हे वेद ज्ञान के उद्धारक चरणों में शीश झुकाते हैं

(6)

तुम थे महान जातिरक्षक दलितों को गले लगाया था
माँ बाप विहीन बच्चों के लिये अनाथाश्रम खुलवाया था
भारत है कृषि प्रधान देश जनता को यह समझाया था
गौशालायें खुलवाकर के गौओं का मान बढ़ाया था
जन-जन को सुख देने वाले तुमको हम शीश झुकाते हैं

(7)

तुम थे स्वतंत्रता अग्रदूत प्रिय देश भक्ति सिखलायी थी
जिस शिक्षा से होकर प्रेरित युवकों ने होड़ लगायी थी
निज देश की लाज बचाने को लाजपत ने लाठियाँ खायीं थी
विस्मिल शहीद भगतसिंह ने हंस-हंस कर फांसी चूमी थी
तुम थे अनन्य प्रिय देश भक्त चरणों में शीश झुकाते हैं।

ओमप्रकाश शास्त्री
पता - यू-128, शकरपुर, दिल्ली-92

thearyasamaj.org

अक्टूबर 2014

CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

प्रेषक :

अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका

कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग –491001 (छ.ग.)

सेवा में,

श्रीमान्

कार्तिक मास की अमावस्या का दिन, सायंकाल का समय। श्री महाराज ने सारे दरवाजे और रोशनदान खुलवा दिए। वेदमंत्रों का पाठ आरम्भ कर दिया। आनन्दमग्न होकर समाधिस्य हो गये। पुनः आंखें खोलकर ओ३म् का उच्चारण कर कहा – "हे दयामय सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अद्भुत तेरी लीला है।" यह कह करवट लेकर श्वास बाहर निकाल दिया। उन्नीसवीं शताब्दी के महर्षि, आर्षधर्म द्रष्टा, अप्रतिम धर्माचार्य और धर्म संशोधक, महान् समाज संस्कारक योगीराज ने सारे जीवन अनेकानेक बुझे दीपकों को प्रज्जवलित किया, उनकी मृत्यु भी पं. गुरुदत्त जैसे दार्शनिक विद्वान् को आस्तिक बनाने में सफल रही।

BPP1 491001 15.10.2014 भारत INDIA POSTAGE ₹2.00

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।